राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक

दिव्य दिनकर

एक निडर सच का दर्पण

रांची और पटना से एक साथ प्रकाशित

8

वर्ष 12 अकं :224 रांची (झारखंड) मंगलवार,27 मई 2025 पेज - 08 मूल्य: 2 RNI NO- JHAHIN/2013/54373

देश में बढ़ रहा कोरोना का खतरा; पिछले एक हफ्ते में 750 नए केस आए, दिल्ली में आंकड़ा 100 के करीब

एजेंसी

नई दिल्ली पिछले एक हफ्ते में 750 नए केस आए, दिल्ली में आंकड़ा 100 के करीब देश में कोरोना के मामले बढ़ते ही जा रहे हैं। बीते एक हफ्ते में देश में कोरोना के 752 नए मामले सामने आए हैं। इस दौरान 305 लोगों ने कोरोना संक्रमण को मात दी। चिंता की बात यह है कि बीते सात दिनों में कोरोना से जान गंवाने वालों का आंकड़ा सात दर्ज किया गया है। मरने वालों महाराष्ट्र के चार, केरल के दो और कर्नाटक का एक शख्स शामिल है। नए मामलों की बात करें तो बीते एक हफ्ते में (19 मई के बाद) सबसे ज्यादा 335 मामले केरल, 153 महाराष्ट्र, 99 दिल्ली, 76 गुजरात और 34 कर्नाटक में आए हैं। स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय के मुताबिक, 26 मई को सुबह 8:00 बजे देश में कोरोना के सक्रिय मामलों की संख्या 1009 है।

कोरोना के सबसे ज्यादा 403 मामले

कुल केसों की बात करें तो केरल में कोरोना के सबसे ज्यादा 403 मामले दर्ज किए गए हैं। मुंबई में 209 और दिल्ली में अब तक 104 मामले दर्ज किए गए हैं। इन शहरों के बाद गुजरात का नंबर आता है, जहां 83 मामले दर्ज किए गए हैं। कर्नाटक में 47, उत्तर प्रदेश में 15 और पश्चिम बंगाल में 12 मामले दर्ज किए गए हैं। केंद्र सरकार की एजेंसी इंडियन ़्रूञ्-ष्टशङ्क-2

जीनोमिक्स कंसोर्टियम (Insacog) के ताजा आंकड़ों के मुताबिक, नए कोरोना संक्रमणों में वृद्धि के बीच दो नए वेरिएंट के मामले सामने आए हैं।

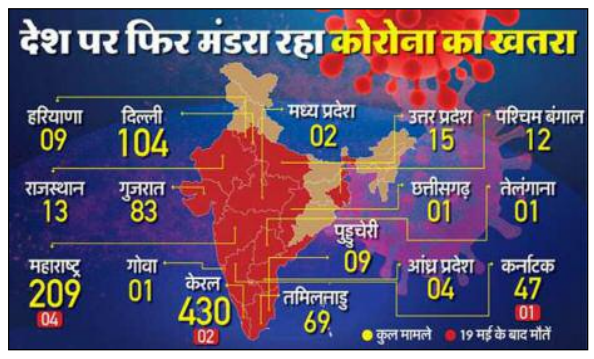

बंगाल में चार और कोविड संक्रमण, सक्रिय मामले 11 हुए

पश्चिम बंगाल में चार और लोगों में कोरोना वायरस की पुष्टि हुई है। अब यहां सक्रिय मामलों की संख्या 11 हो गई है। स्वास्थ्य विभाग के एक अधिकारी ने बताया कि सांस संबंधी समस्याओं वाले मरीजों का सरकारी और निजी अस्पतालों में इलाज चल रहा है। इनमें से ज्यादातर मामले कोलकाता और उसके उपनगरों से सामने आए हैं। 19 मई तक बंगाल में कोरोना का सिर्फ एक सक्रिय मामला था।

बिहार में मौजूदा लहर का पहला मामला सामने आया

बिहार में सोमवार को कोविड-19 की मौजूदा लहर का पहला मामला सामने आया। पटना के 31 वर्षीय एक व्यक्ति में संक्रमण की पुष्टि हुई। निजी अस्पताल में इलाज करा रहे मरीज का हाल ही में राज्य से बाहर यात्रा करने का कोई इतिहास नहीं है।

मोदी ने वडोदरा में किया रोड शो

एजेंसी

वडोदरा। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने गुजरात के वडोदरा में सोमवार को रोड़ शो किया। श्री मोदी की आज सुबह दो दिवसीय गुजरात यात्रा यहां से शुरू हुई। वडोदरा हवाई अड्डे पर पहुंचने पर राज्य के मुख्यमंत्री भूपेंद्र पटेल, केंद्रीय मंत्री और गुजरात भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष सीआर पाटिल तथा गृह राज्य मंत्री हर्ष संघवी सहित अन्य गणमान्यों ने उनका गर्मजोशी से स्वागत किया। उसके बाद उन्होंने वडोदरा में रोड शो किया। जहां अंतर्राष्ट्रीय छात्रों सहित हजारों लोगों ने उनके काफिले पर फूल बरसाए और भव्य स्वागत किया। रोड शो के बाद वह दाहोद के लिए रवाना हो गए। जहां वह रोड शो करके रेलवे सहित राज्य सरकार के विभिन्न विभागों के 24 हजार करोड़ रुपए से अधिक लागत के विकास कार्यों का लोकार्पण और शिलान्यास करेंगे।

उसके बाद श्री मोदी भुज जाएंगे और रोड़ शो करके कई परियोजनाओं उद्घाटन और शिलान्यास करेंगे। भुज से वह शाम को अहमदाबाद आएंगे जहां अहमदाबाद एयरपोर्ट से इंदिरा ब्रिज तक तीन किमी लंबा रोड शो करेंगे और गांधीनगर राजभवन में रात्रि विश्राम करेंगे। उल्लेखनीय है कि 'ऑपरेशन सिंदूर' के बाद यह प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का यह पहला गुजरात दौरा है।

झारखंड में 5 लाख का इनामी नक्सली मुठभेड़ में मारा गया, 10 लाख का इनामी नक्सली गिरफ्तार

एजेंसी

रांची। झारखंड में लातेहार जिला के नेतरहाट थाना क्षेत्र में पुलिस के साथ हुई मुठभेड़ में भाकपा माओवादी संगठन के कमांडर पांच लाख के इनामी मनीष यादव मारा गया जबकि दस लाख का इनामी कुंदन खेरवार को गिरफ्तार कर लिया गया। पुलिस सूत्रों ने आज यहां बताया कि

नक्सलियों के साथ यह मुठभेड़ रविवार देर रात शुरू हुई और सोमवार की सुबह तक चली। मुठभेड़ खत्म होने के बाद चलाए गए सर्च अभियान के दौरान मनीष यादव का शव मिला। मनीष यादव के उपर सरकार ने पांच लाख इनाम की घोषणा की थी। इस अभियान के दौरान लातेहार पुलिस को 10 लाख इनामी कुंदन खरवार को भी पकड़ने में भी सफलता हाथ लगी है।मारे गए नक्सलियों के पास से पुलिस ने कई हथियार भी बरामद किया है। उल्लेखनीय है कि बीते 24 मई को एसपी कुमार गौरव के नेतृत्व में लातेहार पुलिस की टीम ने लातेहार थाना क्षेत्र के इचाबार जंगल में जेजेएमपी सुप्रीमो 10 लाख इनामी उग्रवादी पप्पू लोहरा और पांच लाख इनामी उग्रवादी प्रभात गंझू को भी मार गिराया था।

'मैंने वही किया, जिसके लिए देश ने मुझे प्रधान सेवक बनाया'

▶▶ गुजरात में ऑपरेशन सिंदूर पर बोले मोदी'

'अगर कोई हमारी बहनों के सिंदूर को मिटाएगा, तो उसका भी मिटना तय हो जाता है।

एजेंसी

दाहोद । प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने गुजरात के दाहोद में एक जनसभा को संबोधित करते हुए 'ऑपरेशन सिंदूर' का जिक्र किया। उन्होंने कहा कि सिंदूर मिटाने वालों का मिटना तय है। यह सिर्फ एक सैन्य कार्रवाई नहीं है, बल्कि ये हम भारतीयों के संस्कारों, हमारी भावनाओं की अभिव्यक्ति है। पीएम मोदी ने 'ऑपरेशन सिंदूर' का जिक्र करते हुए कहा, 'ये क्षेत्र मां भारती की, मानवता की रक्षा के लिए हमारे तप और त्याग को दर्शाता है। सोचिए, जम्मू कश्मीर के पहलगाम में आतंकवादियों ने जो कुछ किया, क्या भारत चुप बैठ सकता है? क्या मोदी चुप बैठ सकता

है? आतंकवाद को पनाह देने वालों ने कभी सपने में भी नहीं सोचा होगा कि मोदी से मुकाबला करना इतना मुश्किल होगा।' उन्होंने कहा, 'अगर कोई हमारी बहनों के सिंदूर को मिटाएगा, तो उसका भी मिटना तय हो जाता है। इसलिए 'ऑपरेशन सिंदूर' सिर्फ एक सैन्य कार्रवाई नहीं है। ये हम भारतीयों के संस्कारों, हमारी भावनाओं की अभिव्यक्ति है।'

'ऑपरेशन सिंदूर' पर प्रधानमंत्री मोदी ने कहा, 'मैंने तीनों सेनाओं को पूरी छूट दी और हमारे बहादुर सैनिकों ने वो कर दिखाया, जो दुनिया ने दशकों में नहीं देखा था। हमने सीमा पार चल रहे नौ सबसे बड़े आतंकी शिविरों की पहचान की और उनके ठिकानों की पुष्टि की। 22 अप्रैल को उन्होंने जो खेल खेला, उसके जवाब में हमने 6 मई की रात को सिर्फ 22 मिनट में उन्हें धूल चटा दी। आतंकवादियों ने 140 करोड़ भारतीयों को चुनौती दी थी। इसलिए मैंने वही किया, जिसके लिए देशवासियों ने मुझे प्रधान सेवक की जिम्मेदारी दी है।' प्रधानमंत्री मोदी ने कहा, 'भारत की इस कार्रवाई से बौखलाकर जब पाकिस्तानी सेना ने दुस्साहस दिखाया, तो हमारी सेनाओं ने पाकिस्तानी फौज को भी धूल चटा दी।' प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने पाकिस्तान पर निशाना साधते हुए कहा, 'विभाजन के बाद जिस देश का जन्म हुआ, उसका एक ही लक्ष्य था, भारत का विरोध करना, भारत से नफरत करना और भारत को नुकसान पहुंचाना। लेकिन, भारत का लक्ष्य गरीबी मिटाना, अपनी अर्थव्यवस्था को मजबूत करना और विकसित भारत के रूप में प्रगति करना रहा है। विकसित भारत का विजन केवल एक मजबूत सेना और एक मजबूत अर्थव्यवस्था के माध्यम से ही साकार होगा।'

पाकिस्तान आतंकवाद का गढ़ बन चुका है : मुख्तार अब्बास नकवी

नई दिल्ली । भाजपा सांसद बैजयंत पांडा के नेतृत्व वाले सर्वदलीय प्रतिनिधिमंडल में शामिल एआईएमआईएम के सांसद असदुद्दीन ओवैसी ने बहरीन में प्रमुख हस्तियों के साथ बातचीत के दौरान पाकिस्तान को एक विफल राज्य बताया। ओवैसी के इस बयान पर भाजपा नेता मुख्तार अब्बास नकवी ने पाकिस्तान को आतंकवाद का गढ़ और टकसाल बताया। सोमवार को समाचार एजेंसी से बातचीत के दौरान भाजपा नेता ने कहा कि पाकिस्तान अपने यहां न केवल आतंकवादियों को पैदा कर रहा

है, बल्कि उन्हें दुनिया भर में सप्लाई भी कर रहा है। जब आतंकवाद किसी देश की सबसे बड़ी संपत्ति बन जाता है और आतंकवादियों को उसके सबसे मूल्यवान संसाधन के रूप में देखा जाता है, तो पूरी दुनिया को सचेत करना जरूरी हो जाता है। दुनिया अच्छी तरह से जानती है कि आतंक की फैक्ट्री शांति की खाद नहीं पैदा कर सकती। पाकिस्तान आतंकवादियों के लिए सबसे सुरक्षित पनाहगाह बन गया है, एक ऐसा चारागाह जहां वे खुलेआम फलते-फूलते हैं और यह वैश्विक सुरक्षा के लिए चुनौती है। पूरे विश्व की शांति के लिए आतंकवाद का खात्मा होना बेहद ही जरूरी है। क्योंकि पाकिस्तान ने कभी भी आतंकवादियों के प्रति शर्मिंदगी जाहिर नहीं की है।

'राष्ट्रीय सुरक्षा से नहीं होगा कोई समझौता', असम सीएम ने 'पाकिस्तानी'

लिंक के आरोपों पर गौरव गोगोई को फिर घेरा

एजेंसी

नई दिल्ली । असम के मुख्यमंत्री हिमंत बिस्वा सरमा ने कांग्रेस सांसद गौरव गोगोई की पत्नी पर एक बार फिर 'पाकिस्तानी' लिंक का आरोप लगाया है। उन्होंने कांग्रेस के एक वरिष्ठ नेता के बयान का जिक्र करते हुए दावा किया कि गौरव गोगोई की ब्रिटिश पत्नी वास्तव में पाकिस्तान सरकार के पेरोल पर थीं। असम के मुख्यमंत्री हिमंत बिस्वा सरमा ने सोमवार को सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर लिखा, 'कल, वरिष्ठ कांग्रेस नेता रिपुन बोरा ने एक चौंकाने वाला खुलासा किया। उन्होंने स्वीकार किया कि सांसद गौरव गोगोई की ब्रिटिश पत्नी वास्तव में पाकिस्तान सरकार के पेरोल पर थीं। अगर यह सच है, तो यह राष्ट्रीय सुरक्षा को लेकर गंभीर सवाल खड़े करता है। एक दुश्मन देश से जुड़े

व्यक्ति का एक सांसद के करीबी दायरे में होना भारत की संस्थाओं की अखंडता के लिए गंभीर और अस्वीकार्य खतरा है।' उन्होंने कहा, 'हमें पहले इस चौंकाने वाली जानकारी का पता नहीं था। अब जब यह खुलासा हो गया है, तो इस मामले की गंभीरता के साथ जांच की जा रही है। राष्ट्रीय सुरक्षा से कोई समझौता नहीं होगा। हम बोरा का बयान दर्ज करेंगे और इस मामले में आगे की कार्रवाई करेंगे।' इससे पहले, असम के मुख्यमंत्री हिमंत बिस्वा सरमा ने लोकसभा में कांग्रेस के उपनेता गौरव गोगोई पर आरोप लगाते हुए कहा था कि असम में हमारे पास केवल एक पाकिस्तानी है। उसकी शादी राज्य के एक स्थानीय परिवार में हुई है और वह सुखी जिले में रहती है। वह मूल रूप से पाकिस्तान की है और उसने दीर्घकालिक वीजा के लिए आवेदन किया है। मुख्यमंत्री ने दावा किया था कि राज्य सरकार ने केंद्र सरकार से यह स्पष्ट करने को कहा है कि उसे वापस भेजा जाना चाहिए या नहीं।

मुख्यमंत्री ने कहा था, 'उसके अलावा, असम में हमारे पास कोई पाकिस्तानी नागरिक नहीं है।'

हाईकोर्ट ने स्पाइसजेट से 1,300 करोड़ रुपए का हर्जाना मांगने वाली मारन की याचिका खारिज की

● यह जानकारी बजट एयरलाइन की ओर से रेगुलेटरी फाइलिंग में दी गई।

एजेंसी

नई दिल्ली । दिल्ली हाईकोर्ट की एक खंडपीठ ने केएएल एयरवेज और कारोबारी कलानिधि मारन द्वारा दायर अपील को खारिज कर दिया है। इस याचिका में स्पाइसजेट से 1,300 करोड़ रुपए से अधिक के हर्जाने और अन्य दावों की मांग की गई थी। यह जानकारी बजट एयरलाइन की ओर से रेगुलेटरी फाइलिंग में दी गई। स्पाइसजेट ने बयान में कहा, 'इन दावों को पहले ही आर्बिट्रल ट्रिब्यूनल और दिल्ली उच्च न्यायालय द्वारा खारिज कर दिया गया था। केएएल एयरवेज और कलानिधि मारन ने शुरू में आर्बिट्रेशन कार्यवाही के दौरान 1,300 करोड़ रुपए से अधिक का हर्जाना मांगा था। इन दावों की गहन जांच की गई और बाद में सुप्रीम कोर्ट के तीन सेवानिवृत्त न्यायाधीशों के एक पैनल द्वारा खारिज कर दिया गया।÷ इसके बाद केएएल एयरवेज और कलानिधि मारन ने दिल्ली हाईकोर्ट की एकल पीठ में अपील दायर कर इतनी ही राशि का हर्जाना मांगा, जिसे

न्यायालय द्वारा फिर खारिज कर दिया। दोपहर के कारोबार में स्पाइसजेट के शेयरों की कीमत 2.6 प्रतिशत बढ़कर बीएसई पर 44.97 रुपए प्रति शेयर पर कारोबार कर रहा था। वित्तीय समस्याओं के कारण लंबे समय तक ग्राउंड रहने के कारण अजय सिंह ने पहले स्पाइसजेट को मारन को बेचा था और फिर जनवरी 2015 में एयरलाइन को फिर से खरीद लिया था। ट्रिब्यूनल ने फैसला सुनाया कि मारन को सिंह और एयरलाइन को पीनल इंटरेस्ट के रूप में 29 करोड़ रुपए देने हैं, जबकि सिंह को मारन को ब्याज सहित 579 करोड़ रुपए चुकाने का निर्देश दिया गया था। ट्रिब्यूनल ने फैसले में बताया कि जनवरी 2015 के अंत में मारन और वर्तमान प्रमोटर सिंह के बीच किए गए शेयर बिक्री और खरीद समझौते का कोई उल्लंघन नहीं हुआ है। इसके बाद अपील को खारिज कर दिया गया। फरवरी 2015 में सन नेटवर्क के प्रमोटर और उनके इन्वेस्टमेंट व्हीकल केएएल एयरवेज ने स्पाइसजेट में अपनी 58.46 प्रतिशत हिस्सेदारी को 1,500 करोड़ रुपए की कर्ज देनदारी के साथ मात्र 2 रुपए में सिंह को हस्तांतरित कर दिया था।

एनसीआर में बारिश और तूफान : अगले दो दिन के लिए अलर्ट जारी, 31 मई तक तापमान में गिरावट की संभावना

एजेंसी

नई दिल्ली । राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र (एनसीआर) में मौसम ने एक बार फिर करवट ले ली है। शुरू हुआ तेज बारिश और गरज-चमक वाला मौसम अब भी जारी है और भारतीय मौसम विज्ञान विभाग (आईएमडी) ने 26 और 27 मई के लिए भी चेतावनी जारी कर दी है। मौसम विभाग के अनुसार, इन दो दिनों में तेज बारिश के साथ आंधी-तूफान और 30 से 40 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से चलने वाली तेज हवाओं का सामना एनसीआर के लोगों को करना पड़ सकता है। मौसम विभाग द्वारा जारी रिपोर्ट के अनुसार, 26 मई को अधिकतम तापमान 32 डिग्री सेल्सियस और न्यूनतम 20 डिग्री

सेल्सियस दर्ज किया जाएगा। इस दिन बारिश के साथ बिजली गिरने और तेज हवाओं का प्रकोप देखने को मिल सकता है। इसी तरह, 27 मई को भी मौसम विभाग ने थंडरस्टॉर्म के साथ बारिश की भविष्यवाणी की है, जिसमें अधिकतम तापमान 35 डिग्री और न्यूनतम 24 डिग्री रहेगा। 28 मई को स्थिति थोड़ी हल्की होगी, जहां बादलों के छाए रहने और बिजली गिरने की संभावना जताई गई है, लेकिन कोई चेतावनी जारी नहीं की गई है। 29 और 30 मई को फिर से 'थंडरस्टॉर्म विथ रेन' की संभावना है, लेकिन राहत की बात यह है कि इन दिनों मौसम विभाग की ओर से कोई चेतावनी जारी नहीं की गई है। 31 मई को हल्की बारिश या गरज के साथ छींटे पड़ने की संभावना जताई गई है। इस बदले हुए मौसम के कारण तापमान में गिरावट दर्ज की जा रही है। जहां मई के महीने में पारा अक्सर 40 डिग्री के पार चला जाता है, वहीं इस बार 26 से 31 मई के बीच तापमान 32 से 38 डिग्री के बीच बना हुआ है, जिससे लोगों को गर्मी से कुछ राहत जरूर मिली है।

हर पीड़ित को न्याय दिलाना और जरूरतमंदों के चेहरे पर मुस्कान लाना ही सरकार का उद्देश्य : सीएम योगी

जनता दर्शन में आए दिव्यांग की भी शिकायत सुनकर सीएम ने तत्काल निराकरण का निर्देश दिया।

एजेंसी

लखनऊ । उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने सोमवार को 'जनता दर्शन' में प्रदेश भर से आए फरियादियों की समस्याएं सुनी। इस दौरान यहां प्रदेश भर से लगभग 65 से अधिक पीड़ित पहुंचे। सीएम योगी हर पीड़ित के पास स्वयं पहुंचे, समस्या सुनी, प्रार्थना पत्र लिया और उन्हें अहसास कराया कि हर समस्या में सरकार साथ खड़ी है। मुख्यमंत्री योगी ने निराकरण के लिए अधिकारियों को निर्देशित किया। उन्होंने कहा कि हर पीड़ित को न्याय दिलाना और चेहरे पर मुस्कान लाना ही सरकार का उद्देश्य है। जनता दर्शन में पुलिस, राजस्व, चिकित्सा सहायता, पेंशन, फीस माफी, आवास, आंगनबाड़ी आदि से जुड़े

अनेक मामले आए, जिस पर प्रार्थना पत्र लेकर मुख्यमंत्री ने संबंधित अधिकारियों को तत्काल कार्रवाई का निर्देश दिया। मुख्यमंत्री ने अभिभावकों के साथ पहुंचे बच्चों को पुचकारा-दुलारा और चॉकलेट भी दी। इस दौरान सीएम योगी ने अधिकारियों को निर्देशित किया कि स्थानीय शिकायतों का समाधान जनपद स्तर पर ही कराया जाए। जो समस्याएं शासन स्तर से निस्तारित होनी हैं, उन्हें ही यहां भेजी जाए। हर पीड़ित को न्याय दिलाकर चेहरे पर मुस्कान लाना ही सरकार का उद्देश्य और समस्याओं का निस्तारण सरकार की विशेष प्राथमिकता है। अफसरों से कहा कि पीड़ितों की समस्याओं को गंभीरता और संवेदनशीलता से लेते हुए उनका समाधान त्वरित और संतुष्टि परक तरीके से कराना सुनिश्चित कराएं। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने जनता दर्शन में आए बच्चों को दुलार किया। उन्होंने बच्चों से बातें की, पढ़ाई के बारे में जानकारी ली, फिर चॉकलेट-टॉफी प्रदान कर उज्ज्वल भविष्य का आशीर्वाद दिया। जनता दर्शन में आए दिव्यांग की भी शिकायत सुनकर सीएम ने तत्काल निराकरण का निर्देश दिया।सीएम योगी के कार्यालय ने जनता दर्शन की फोटो शेयर करते हुए सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म 'एक्स' पर लिखा, 'जन-जन की सुरक्षा, समृद्धि व खुशहाली सीएम योगी की शीर्ष प्राथमिकता है।

सीएम भजनलाल शर्मा ने नई दिल्ली में श्री बटुक भैरव मंदिर में की पूजा-अर्चना

एजेंसी

जयपुर । सीएम भजनलाल शर्मा ने नई दिल्ली के कनॉट प्लेस के पास राजस्थान सरकार के देवस्थान विभाग द्वारा संचालित श्री बटुक भैरव मंदिर में पूर्ण विधि-विधान से पूजा-अर्चना की ।सीएम भजनलाल शर्मा ने कहा कि प्रभु श्री बटुक भैरव जी का आशीर्वाद हम सभी पर सदैव बना रहे। साथ ही हमारा जीवन सुख, समृद्धि और खुशहाली से परिपूर्ण हो, यही प्रार्थना है।

'अच्छे दिन' की बात अब एक 'डरावने सपने' की तरह साबित हुई, खड़गे का केंद्र सरकार पर हमला

एजेंसी

नई दिल्ली । कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने सोमवार को केंद्र सरकार पर जमकर निशाना साधा। उन्होंने 2014 के चुनावी वादों की याद दिलाते हुए सरकार पर तंज कसा। इसके साथ कांग्रेस अध्यक्ष खड़गे ने 7 प्वाइंट गिनाते हुए बताया कि मोदी सरकार के 11 साल का कार्यकाल कैसा रहा। कांग्रेस अध्यक्ष खड़गे ने कहा कि 11 सालों में मोदी सरकार ने देश की ऐसी दुर्दशा की कि 'अच्छे दिन' की बात अब एक 'डरावने सपने' की तरह साबित हुई। 140 करोड़ जनता का हर तबका परेशान है। उन्होंने अपने सोशल मीडिया पोस्ट में युवा, किसान, महिलाओं, अर्थव्यवस्था और विदेश नीति का भी जिक्र करते हुए केंद्र को भी निशाने पर लिया।

मल्लिकार्जुन खड़गे ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म 'एक्स' पर लिखा, '26 मई 2014, 11 सालों में बड़े-बड़े 'वादों' को खोखले 'दावों' में बदलकर मोदी सरकार ने देश की ऐसी दुर्दशा की, कि 'अच्छे दिन' की बात अब एक 'डरावने सपने' की तरह साबित हुई।' उन्होंने आगे लिखा, 'युवाओं से सालाना दो करोड़ नौकरियों का वादा किया, लेकिन असलियत में करोड़ों नौकरियां गायब हैं। किसानों की आय दोगुनी करने का वादा, लेकिन उन्हें रबर बुलेट खाने पड़ी। महिला आरक्षण पर शर्तें लागू, सुरक्षा तार-तार हुई। कमजोर वर्ग-एससी/एसटी/ओबीसी/अल्पसंख्यकों पर भयावह अत्याचार, और हिस्सेदारी खत्म हो गई।' मल्लिकार्जुन खड़गे ने अर्थव्यवस्था का जिक्र करते हुए कहा कि महंगाई की पराकाष्ठा, बेरोजगारी की बाढ़, खपत ठप्प, 'मेक इन इंडिया' फ्लॉप रहा और असमानता चरम पर है।

संक्षिप्त समाचार

आयुष जांच शिविर में 109 लोगों का स्वास्थ्य जांच किया गया

रिपोर्ट- अविनाश मंडल

पाकुड़:लिट्टीपाड़ा प्रखंड के लिट्टीपाड़ा, पाकुड़िया प्रखंड के चौकीसाल एवं पाकुड़ प्रखंड के सोनजोड़ी में आयुष विभाग की ओर से सोमवार को आयुष कैंप लगाकर कुल 109 लोगों का स्वास्थ्य जांच कर आवश्यक दवा दिया गया। डॉ० प्रेम प्रकाश, डॉ वीरेंद्र कुमार विश्वकर्मा एवं डॉ अबूतालिब शेख ने बताया की इस कैंप में आज रक्तचाप, मधुमेह, जॉइंट पेन, गठिया, बच्चों से संबंधित आदि रोगों का जांच निःशुल्क किया गया। साथ ही सभी को मुफ्त दवा भी दी गई। वहीं शिविर में आने वाले मरीजों को शुगर, ब्लड प्रेशर का भी जांच की गई।

ऑपरेशन सिंदूर : संजय कुमार झा के नेतृत्व में दक्षिण कोरिया में मुलाकात की

नई दिल्ली , । ऑपरेशन सिंदूर का मकसद और पाकिस्तान का असल चेहरा दुनिया को बताने के लिए देश के 59 सांसदों को 33 देश भेजा जा रहा है। 59 सांसद 7 सर्वदलीय टीमों (डेलिगेशन) में बंटे हैं। जिनमें कुल 17 सांसद हैं। जदयू के राष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष और राज्यसभा सांसद संजय कुमार झा के नेतृत्व में सर्वदलीय संसदीय प्रतिनिधिमंडल ने दक्षिण कोरिया में प्रथम उप विदेश मंत्री और राष्ट्रीय असेंबली की राष्ट्रीय रक्षा समिति के अध्यक्ष से मुलाकात की।इस दौरान सबको पहलगाम में हुए जघन्य आतंकवादी हमले और भारत द्वारा दी गई संतुलित प्रतिक्रिया के बारे में जानकारी दी गई। सांसद संजय झा की अगुआई वाला पहला डेलिगेशन विदेश रवाना हो गया हुआ था, जबकि शिवसेना सांसद श्रीकांत शिंदे के नेतृत्व वाला डेलिगेशन भी गया।7 टीमों के साथ 8 पूर्व राजनयिक भी रहेंगे। विदेश सचिव विक्रम मिसरी ने मंगलवार को सांसदों को इस पहल के बारे में ब्रीफिंग दी। सूत्रों के मुताबिक, इसमें ऑपरेशन सिंदूर का बैकग्राउंड और डिप्लोमैटिक एवं सैन्य कार्रवाई के पांच बड़े संदेश इन 33 देशों तक पहुंचाने पर जोर दिया।

नियोजन मेला में 1088 प्रतिभागियों ने लिया भाग

नियोजन मेले का उद्घाटन मुंगेर विधायक प्रणव कुमार ने दीप प्रज्वलित कर किया

मुंगेर। श्रम संसाधन विभाग, बिहार अंतर्गत जिला नियोजनालय मुंगेर द्वारा सोमवार को बीएमपी 9 ग्राउंड जमालपुर में एक दिवसीय नियोजन मेला का आयोजन किया गया। मुंगेर सदर विधायक प्रणव कुमार यादव एवं उप निदेशक नियोजन भागलपुर प्रमंडल, भागलपुर द्वारा दीप प्रज्वलित कर के नियोजन मेला का शुभारंभ किया गया । उक्त नियोजन मेला में निजी और सार्वजनिक उपक्रम की 21 नियोजकों ने भाग लिया। इसके साथ ही 5 विभागीय स्टाल के माध्यम से लोगों को जागरूक किया गया। नियोजन मेला में टेक्निकल, इंश्योरेंस, फाइनेंस, सेल्स, सिक्योरिटी आदि सेक्टर की कंपनियों ने भाग लिया। साथ ही डी आर सी सी, जिला उद्योग, आर सेटी, बिहार कौशल विकास मिशन और श्रम विभाग के स्टाल के माध्यम से मेला में उपस्थित प्रतिभागियों को विभिन्न योजनाओं के बारे जागरूक किया। नियोजन मेला में कुल 1088 लोगों ने भाग लिया जिसमें विभिन्न नियोजक द्वारा कुल 311 लोगो को प्रारंभिक चयन किया गया। एवं 448 लोगो को अगले चरण के लिए शॉर्ट लिस्ट किया गया। उक्त नियोजन मेला में सहायक निदेशक, जिला नियोजन पदाधिकारी, श्रम प्रवर्तन पदाधिकारी , वाई पी एवं जिला कौशल प्रबंधक मुंगेर उपस्थित रहें।

हाजत मे बंद आरोपी के पत्नी ने थाना पहुंच पति का किया पूजन

दिव्य दिनकर संवाददाता धरहरा

सोमवार को धरहरा पुलिस की एक नया चेहरा देखने को मिला। जब शराब के साथ पकड़े आरोपी के लिए वट सावित्री का व्रत रखी पत्नी थाना पहुंच हाजत के बाहर अपने पति की लंबी आयु के लिए हाथों में रक्षा सूत्र बंधा और पांव छूकर आशीर्वाद लिया । जानकारी के अनुसार बीती रात धरहरा पुलिस ने समकालीन अभियान के तहत धरहरा थाना क्षेत्र के बड़ी गोविंदपुर निवासी दो शराब तस्कर विक्की यादव और सुमित यादव को 150 लीटर देशी महुआ शराब के साथ गिरफ्तार किया गया । पुलिस उसे कोर्ट में पेश कर जेल भेजने की तैयारी कर रही थीं।तभी विक्की यादव की पत्नी मधु देवी अपने पति के लंबी आयु के लिए वट सावित्री का व्रत रखी हुई थाना पहुंची। थानाध्यक्ष से अपने पति की पूजा करने का अनुरोध करने लगी। थानाध्यक्ष ने मानवीय पहलू को दर्शाते हुए तत्काल सिपाहियों को बोल शराब कारोबारी विक्की यादव को हाजत से बाहर निकलवाया । जिसके बात पत्नी ने उसके पांव छूए और अखंड सौभाग्यवती की कामना की।

बकरीद पर्व के मद्देनजर जिला स्तरीय शांति समिति की बैठक संपन्न

रिपोर्ट- अविनाश मंडल

पाकुड़:पाकुड़ कृषि उत्पादन बाजार समिति पाकुड़ में उपायुक्त मनीष कुमार की अध्यक्षता में आगामी ईद उल जुहा (बकरीद) त्योहार के अवसर पर विधि व्यवस्था संधारण हेतु जिला स्तरीय शांति समिति के सदस्यों के साथ बैठक आयोजित की गई। बैठक में आगामी पर्व बकरीद त्योहार के दौरान विधि व्यवस्था, शांति व्यवस्था एवं जनसुविधाओं तथा सुगम यातायात व्यवस्था के संदर्भ में चर्चा कर सबसे सहयोग की अपील की गई।

शांतिपूर्ण, सौहार्द्रपूर्ण वातावरण में संयमित तथा अनुशासित तरीके से पर्व-त्योहार मनायें: डीसी

उपायुक्त मनीष कुमार ने कहा कि आगामी त्योहारों को देखते हुए विधि व्यवस्था को सुदृढ़ बनाएं रखने की आवश्यकता है। साथ ही हमें विशेष एहतियात एवं निगरानी बरतने की आवश्यकता है, ताकि शांति एवं सौहार्दपूर्ण माहौल में आगामी त्योहारों को संपन्न कराया जा सके।उपायुक्त ने सभी प्रशासनिक एवं पुलिस पदाधिकारियों को बकरीद पर विधि व्यवस्था संधारण हेतु पूरी चौकसी रखने का निर्देश दिया। उपायुक्त ने संवेदनशील स्थानों पर दंडाधिकारी तथा पर्याप्त पुलिस बल प्रतिनियुक्त करने का निर्देश दिया।उपायुक्त ने सोशल मीडिया पर कड़ी निगरानी रखने का निर्देश दिया। उन्होंने कहा कि त्योहार के दौरान यदि किसी शरारती तत्व द्वारा सोशल मीडिया के माध्यम से अफवाह फैलाने की कोशिश की गई, तो उसके विरुद्ध कड़ी कारवाई की जाएगी। जिला प्रशासन सोशल मीडिया पर सख्त

निगरानी रखेगी, सावधानी से सोशल मीडिया का उपयोग करें, किसी तरह के अफवाहों पर ध्यान नहीं दें, भ्रामक एवं अपुष्ट खबरों का सत्यापन प्रशासन से जरूर करा लें।उन्होंने बकरीद पर्व पर असामाजिक तत्वों पर निगरानी रखने का निर्देश दिया। उन्होंने सभी पुलिस पदाधिकारियों एवं दंडाधिकारियों को पूरी सतर्कता एवं सजगता के साथ कार्य करने का निर्देश दिया। जिला स्तरीय नियंत्रण कक्ष को 247 क्रियाशील रखते हुए निगरानी रखी जाएगी ताकि असामाजिक तत्वों पर नियंत्रण रखा जा सके।

सोशल मीडिया पर अफवाह फैलाने वालों पर की जाएगी कड़ी कार्रवाई

पुलिस अधीक्षक प्रभात कुमार ने कहा कि विधि व्यवस्था बिगाड़ने तथा आपसी सौहार्द बिगाड़ने वाले असामाजिक तत्वों वाले व्यक्ति के साथ सख्ती से निपटा जाएगा। सुरक्षा एवं विधि व्यवस्था को लेकर पर्याप्त संख्या में दण्डाधिकारी, पुलिस पदाधिकारी व पुलिस बल की प्रतिनियुक्ति रहेगी।संवेदनशील स्थानों पर विशेष चौकसी बरती जाएगी। आपके उत्सव के माहौल में कोई बाधा नहीं पहुंचाये इस उद्देश्य से पुलिस प्रशासन द्वारा सभी एहतियाती कदम उठाये जा रहे हैं। पुलिस अधीक्षक ने अनुरोध किया कि सोशल मीडिया पर किसी प्रकार के विवाद/अफवाह फैलाने वाले मैसेज का पूरी तरह खंडन करते हुए मैसेज को भेजने वाले अथवा फॉरवर्ड करने वाले व्यक्ति के विरुद्ध संबंधित थाने को त्वरित रूप से सूचित करेंगे। उन्होंने लोगों से अफवाहों पर ध्यान न देने तथा अफवाह फैलाने वाले असामाजिक तत्वों के बारे में नजदीकी थाने अथवा जिला प्रशासन को सूचित करने का निर्देश दिया। साथ ही पुलिस अधीक्षक ने कहा कि पाकुड़ जिले को अग्रणी जिला की सूची में ले जाना है। इसके लिए आप सभी गणमान्य लोगों को आगे आना होगा। मौके पर अपर समाहर्ता, अनुमंडल पदाधिकारी, सिविल सर्जन, जिला आपूर्ति पदाधिकारी, अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी, महेशपुर एवं पाकुड़, प्रशासक, नगर परिषद, सभी प्रखंड विकास पदाधिकारी एवं अंचलाधिकारी, थाना प्रभारी एवं जिला के गणमान्य लोग उपस्थित थे।

बोकारो में आयोजित सीनियर एथलेटिक्स चैंपियनशिप में जयराम और सुमित ने 2 पदक देवघर के झोली में डाले वहीं मनोज मरांडी पदक से चुके

देवघर से दिव्य दिनकर संवाददाता प्रेम रंजन झा

14वीं राज्यस्तरीय सीनियर एथलेटिक्स चैंपियनशिप का आयोजन झारखंड एथलेटिक्स संघ और बोकारो जिला एथलेटिक्स चैंपियनशिप का आयोजन सिंथेटिक ट्रैक पर सम्पन्न हुआ इस प्रतियोगिता में देवघर के जयराम ने 10 किलोमीटर पैदल चाल और सुमित कुमार ट्रिपल कूद में कांस्य पदक जीता वही मनोज मरांडी 200 मीटर दौड़ में पदक से चूक गए वो चौथे स्थान पर संतोष करना पड़ा बताते चले की प्रतियोगिता में लगभग 20 राष्ट्रीय खिलाड़ी भी भाग ले रहे थे। देवघर से कुल 11 सदस्य टीम ने भाग लिया । टीम में सुमित सिंह, जयराम कुमार पंडित, रंजन कुमार,

विनोद कुमार खवाड़े, मनोज मरांडी, प्रेम सोरेन, सत्यम ताती, जीतेंद्र यादव, संगीता कुमारी, रोहित बावरी, एव रंजुला कुमारी शामिल थे, टीम के साथ प्रबंध कमेटी के चेयरमैन आशीष झा भी साथ थे। आशीष झा ने कहा की जो गलती खिलाड़ियों ने किया है उसे काफी नजदीक से देखा वो कोच के साथ वार्ता कर जो पदक से चुके है उनपर कार्य किया जायेगा । देवघर जिला एथलेटिक्स संघ के अध्यक्ष डॉङ्क सुनील खवाड़े ने कहा की खिलाडियों ने मान देवघर जिला का मान बढ़ाया है उनको सम्मानित किया जायेगा। और अगले महीने होने वाले 14 एवं 16 वर्ष का चैंपियनशिप जो जामताड़ा में होना तय है खिलाड़ियों के लिए एक सप्ताह का स्पेशल कैंप का आयोजन जल्द किया जाएगा। सिलेक्शन कमेटी और कोच के साथ बैठक जल्द कर रणनीति तैयार की जाएगी। सचिव मनोज मिश्रा, नीतू देवी, सुरेश शाह, रवि केसरी, रामू चक्रवर्ती, डॉ अमित प्रसाद, प्रभाकर शांडिल्य, आशीष दुबे, निक्की झा, बंटी नंदन सिंह, नीतीश सिंह, अमित झा, प्रमोद यादव, राहुल कुमार, चंदन कुमार, गौरव कुमार, मनोज पांडे, राजेश कुमार, दीपक दुबे, प्रकाश मठपती, अजय खवाड़े,आलोक बोस एव सभी खेल प्रेमियों ने शुभकमनायें दिये।

केंद्रीय राज्य कृषि मंत्री रामनाथ ठाकुर ने देवघर जिला जदयू के कार्यकताओं के साथ संगठन की मजबूती को लेकर की बैठक

देवघर से दिव्य दिनकर संवाददाता प्रेम रंजन झा

आज केंद्रीय राज्य कृषि मंत्री रामनाथ ठाकुर के साथ देवघर जिला जेडीयू कर कताओं के साथ बैठक कर संगठन के प्रति विचार विमर्श किया एवं उनके द्वारा संगठन मजबूती है हेतु टिप्स दिए गए ताकि आने वाले समय में देवघर जिला में जदयू का संगठन मजबूत हो सके जिसमें देवघर जिला के सभी जिला पदाधिकारी प्रखंड अध्यक्ष उपस्थित होकर उनके सुझाव को मानते हुए आगे पंचायत स्तर से लेकर प्रखंड स्तर जिला स्तर पर संगठन मजबूती पर सहमति प्रदान किया उसके बाद श्री रामनाथ ठाकुर द्वारा विभाग में पदाधिकारियो के साथ बैठक किए गए जिसमें झारखंड में विकास हेतु कार्य किया जा रहे और किए गए के संबंध में जानकारी प्राप्त किया और सुझाव दिए विभाग में पदाधिकारी के बैठक के बाद श्री ठाकुर मुजफ्फरपुर के लिए प्रस्थान कर गए, भवदीय जिला अध्यक्ष जदयू सतीश दास देवघर,

ध्वनि फाउंडेशन के संस्थापक अरविंद और निदेशक अनंगदेव सिंह का देवघर चेतना विकास में दो दिवसीय दौरा

देवघर से दिव्य दिनकर संवाददाता प्रेम रंजन झा

ध्वनि फाउंडेशन, बेंगलुरु के संस्थापक अरविंद तथा नीरंथरा क्लासिक कार्यक्रम के निदेशक अनंगदेव सिंह ने 25 और 26 मई 2025 को देवघर स्थित चेतना विकास का समग्र दौरा किया. यह दौरा संगठनात्मक विकास, पारदर्शता, क्षमता निर्माण और फील्ड परियोजनाओं के निरीक्षण के उद्देश्य से किया गया था. दौरे के पहले दिन, टीम ने 'जीवा' प्राकृतिक खेती परियोजना के फील्ड क्षेत्र का अवलोकन किया. उन्होंने किसानों से बातचीत की, फील्ड गतिविधियों को प्रत्यक्ष रूप से देखा और चेतना

विकास के द्वारा किए जा रहे कार्यों की सराहना की. उन्होंने टीम को परियोजना की गुणवत्ता को और सुदृढ़ बनाने के लिए व्यावहारिक सुझाव भी प्रदान किए. दूसरे दिन, ध्वनि फाउंडेशन की टीम ने संस्था के देवघर प्रशासनिक कार्यालय का दौरा किया, जहाँ उन्होंने सचिव, निर्देशिका, बोर्ड सदस्यों और प्रमुख विभागीय कर्मियों से मुलाकात की. विशेष रूप से उन्होंने अनुपालन और वित्त प्रबंधक तथा फंडरेजिंग प्रबंधक के साथ गहन चर्चा की और प्रशासनिक प्रक्रियाओं को और प्रभावी बनाने की सलाह दी. उन्होंने टीम के अन्य सदस्यों से भी संवाद कर उनके कार्यों को समझा और प्रोत्साहित किया. देवघर संस्था के सचिव कुमार रंजन ने कहा, ह्लध्वनि फाउंडेशन की यह यात्रा हमारे लिए अत्यंत प्रेरणादायक रही.

उनके अनुभव, मार्गदर्शन और सलाहों से हमें अपने कार्यों को और बेहतर करने की दिशा में स्पष्ट दिशा मिली है. यह दौरा संस्था के लिए न केवल एक सीखने का अवसर था, बल्कि संगठनात्मक मजबूती की दिशा में एक महत्त्वपूर्ण कदम भी माना जा रहा है।

मानसून की पहली बरसात ने गयाजी की बिकास बदहाली की खोली शर्मनाक पोल

गया से अमरेंद्र कुमार दिव्य दिनकर के लिए।

जब विकाश के दाबे झूठे और कागजी हों,जब नागरिक प्रशासन नागरिक सुविधा बहल करने में कम और उन सुविधाओं को गिनाने और दिखाने में जायदा सक्रिय हो तो जमीन पर आपको इसी तरह के नजारे की दर्शन देखने को मिलेगी। जी मैं बात कर रहा हूं गया कि चौतरफा बिकास कार्यों की बदहाली का जहां दावे और दिखावे तो टन भर का किया जाता है,लेकिन जमीन पर काम मन भर भी नहीं होता। आज गया जी में बरसाती मानसून की पहली वारिश हुई है और नगर निगम एवं जिला प्रशासन की तैयारी इतनी पुख्ता की जहां से बैठ कर गया के विकाश की रूप रेखा,नियम कानून बनाई जाती है वहीं स्थान मानसून की पहली वारिश में पानी पानी हो गया यूं कहें जलमग्न हो गया,वो भी जिलाधिकारी और नगर आयुक्त के आंखों के सामने इन अधिकारियों को समझ नहीं आ रही थी,कि हम अपनी सरकारी गाड़ी में अपने कार्यालय से निकल कर बैठें तो कैसे बैठें। आखिर ये दुर्दशा हो भी क्यों न हो जहां सरकारी फंडों में ठेकेदार और अधिकारी की बंदरबाट हो,हिस्से की रस्साकस्सी हो तो विकास की बलि और जनसामान्य की फजीहत तो होगी ही न। गया जिला प्रशासन और नगर निगम आज तक गया जी को इस शहर के ऐतिहासिकता के हिसाब से विकसित नहीं किया,आज भी गयाजी की नागरिक सुविधा घोर

बदहाली की शिकार बनी हुई है। तथा जिला प्रशासन एवं नागरिक प्रतिनिधि एवं नगर निगम अपने जेब और निजी विकास करने में तत्पर हैं,इन्हें गयाजी की सूरत सीरत बदलने की कोई जल्दी नहीं या इनके पास कोई कार्ययोजना नहीं है। आप जिधर देखेंगे आपको कहीं भी ऐसा नहीं लगेगा कि हम गयाजी जैसा ऐतिहासिक शहर में घूम रहे हैं,आपको चारों तरफ अतिक्रमण,बेलगाम ट्रैफिक सिस्टम,स्ट्रीट लाइट की अभाव,ड्रेनेज सिस्टम की बदहाली,साफ सफाई,पार्क स्टेडियम की उपेक्षित हालत,सरकारी तालाबों का अतिक्रमण एवं भूमि माफियाओं द्वारा कब्जा,जल निकाशी सुविधा की अभाव,सड़क की चौड़ीकरण,शहर में वृक्षारोपण,शहर की सौंदर्यीकरण कहीं भी आपको स्पष्ट बिकास की झलक देखने को नहीं मिलेगा। गयाजी के लोगों का कहना है कि इन सभी समस्याओं का कारण गयाजी के प्रतिनिधि,नगर निगम एवं जिला प्रशासन उपेक्षित नीतियां हैं,जो जनहित में कम स्वहित में जायदा कार्य करती है।

पति की लंबी उम्र का '5G संकल्प': देवघर में सजी श्रद्धा की मंडी, वट सावित्री पर व्रतधारिणियों ने रचा इतिहास

देवघर से दिव्य दिनकर संवाददाता प्रेम रंजन झा

देवघर में सोमवार को वट सावित्री व्रत के पावन अवसर पर आस्था और परंपरा का अनोखा संगम देखने को मिला। बाजारों में सुबह से ही सुहागनों की चहलकदमी शुरू हो गई थी और हर एक के हाथ में पूजा की थाली, सिंदूर, फल और डोरियाँ थीं। मानो पूरा शहर लाल चुनरियों और चूड़ियों की खनक से गूंज उठा हो। सभी सुहागिनों ने अपने पतियों की लंबी उम्र के लिए निर्जला व्रत रखा और वट वृक्ष की पूजा विधिपूर्वक सम्पन्न की। यह व्रत न केवल कठिन तप का प्रतीक है, बल्कि पत्नी की अपने पति के लिए अडिग श्रद्धा और प्रेम की मिसाल भी है।

बाजारों में मची थी जैसे 'मंगल सूत्र महाकुंभ' की धूम

खपडोडीह निवासी बबली देवी ने कहा, हम तो साल भर

इस दिन का इंतजार करते हैं। व्रत तो कठिन होता है, लेकिन जब मन में विश्वास हो कि पति की उम्र बढ़ेगी, तो सब आसान लगता है। कालीबाड़ी मोहल्ले की मीना देवी ने चुटकी लेते हुए कहा, ₹अब पति जी को भी समझ में आ जाना चाहिए कि उनकी लंबी उम्र के पीछे हमारा भी हाथ है झ और वो भी बिना पानी पिए! दुर्गा स्थान की सरिता देवी बोलीं, मेरे पति जब भी बीमार होते हैं, मैं कहती हूं– 'अभी तो वट सावित्री बचा है, तुम कहीं नहीं जा सकते!' व्रत के दिन जैसे उन्हें ऑटोमेटिक एनर्जी मिलती है। प्रियंका देवी ने हँसते हुए कहा, ₹इस दिन तो पति खुद ही पूछते हैं कि पूजा का समय कब है, वरना साल भर टाइम नहीं मिलता इन्हें ! भीड़ में पूजा सामग्री खरीद रहीं चंद्रा देवी ने बताया, ₹हर बार नई चूड़ियां, नई साड़ी और नया संकल्प–ये दिन हमारे लिए तीज जैसा होता है, बस फर्क इतना कि हम व्रत रख कर भी मुस्कराते हैं। संगीता देवी ने कहा, ₹पति की लंबी उम्र के लिए क्या कुछ नहीं करते। ये व्रत तो बस एक माध्यम है, बाकी तो हमारी ममता और विश्वास का कमाल है। लकड़ी गंज से पूनम देवी

, शिल्पी झा एवं आंसू झा ने कहा पति है तो सब कुछ है उनके लिए पूजा करना बहुत सौभाग्य की बात है अंत में बस यही कहा जा सकता है: देवघर की सड़कों पर सोमवार को श्रद्धा का ऐसा मेला लगा जिसमें पानी नहीं था, पर उमंग की नदियाँ बह रही थीं। सुहागनों ने अपनी अटूट आस्था से ये साबित कर दिया कि पतियों की लंबी उम्र के लिए उनका प्रेम और त्याग आज भी चिरंजीवी है–बिलकुल वटवृक्ष की तरह।

साहिबगंज में 27 मई को झामुमो का विशाल धरना प्रदर्शन कार्यक्रम

साहिबगंज : बोरियो झामुमो प्रखण्ड कमेटी की बैठक मोरंग नदी के समीप हुई। उक्त बैठक में मुख्य अतिथि के रूप में झामुमो जिला अध्यक्ष अरुण कुमार सिंह शामिल हुए। बैठक में जिला अध्यक्ष अरुण कुमार सिंह ने सभी 17 पंचायतों के अध्यक्ष सचिव व पूरी कमेटी को निर्देशित किया कि आगामी 27 मई को (जिला समाहरणालय) के समीप विशाल धरना प्रदर्शन कार्यक्रम भाजपा की केंद्र सरकार विरोध में झामुमो जिला कमेटी के द्वारा किया जाना है।झारखण्ड की पुरानी मांग सरना धर्म कोड/आदिवासी धर्म कोड विधेयक को लागू जब तक केंद्र की सरकार झारखंड में नही करती है, तब तक जातिगत जनगणना नही के पक्ष में पूरा झारखण्ड खड़ा है।

संक्षिप्त समाचार

धरहरा मे आग से खेलना छात्र को पड़ा महंगा

दिव्य दिनकर संवाददाता।

धरहरा प्रखंड अंतर्गत मध्य विद्यालय नंबर वन का छात्र शनिवार को पेट्रोल से बुरी तरह झुलस गया था। इस दौरान छात्र का चेहरा बुरी तरह से जख्मी हो गया। जख्मी धरहरा दास टोला निवासी विभीषण कुमार दास का पुत्र रिशव कुमार वर्ग आठ का छात्र है। वहीं विद्यालय के शिक्षकों के द्वारा उसे सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र धरहरा में इलाज के लिए भर्ती कराया गया। वहीं सोमवार को विद्यालय खुलते ही दर्जनों ग्रामीणों के साथ परिजन जख्मी छात्र को लेकर विद्यालय पहुंचा। विद्यालय प्रशासन की कुव्यवस्था पर जमकर हंगामा किया।ग्रामीणों का कहना था कि विद्यालय में ज्वलनशील पदार्थ (पेट्रोल) कौन लाया और बच्चा के हाथ कैसे लगा। स्कूल प्रशासन इसका जवाब दे।जानकारी के अनुसार घटना के दिन गांधी मैदान धरहरा मे सीआरसी स्तर पर आसपास के विद्यालयो के बच्चे का खेल था। सभी बच्चे मैदान खेलने गए। इसी दौरान छात्र और उसके कुछ सहपाठी पेट्रोल लेकर विद्यालय पहुंचा और पास के एक दुकान से उधार माचिस ली। चुपके से विद्यालय की छत पर पहुंचा और मुंह मे पेट्रोल भरकर जलती माचिस के तीली के उपर फूंक मारी। सहपाठियो को करतब दिखाने के दौरान छात्र जख्मी हुआ। हालांकि छात्र का कहना है कि पेट्रोल जमीन पर गिर गया था। उसी दौरान माचिस जलाने से वह जख्मी हुआ। हालांकि इस संबंध मे मध्य विद्यालय नंबर वन की प्रधानाध्यापिका अगस्टीना सोरेन का कहना है कि पेट्रोल कौन लाया इसकी जानकारी उन्हें नहीं है। क्योंकि सीआरसी स्तर पर आयोजित मशाल जुलूस कार्यक्रम में अन्य विद्यालय के शिक्षक भी मौजूद थे। घटना बच्चो को छुट्टी देने के बाद घटित हुई है।

जेईई मेन पेपर टू में अक्फ68 हासिल करने वाले डीपीएस के प्रसून प्रवर को प्रिंसिपल जया चौहान ने किया सम्मानित

रिपोर्ट- प्रमोद कुमार सिंह

औरंगाबाद :- नेशनल टेस्टिंग एजेंसी एनटीए के द्वारा शुक्रवार को जारी जेईई मेन टू(बी प्लानिंग) के रिजल्ट में डीपीएस रांची के प्रसून प्रवर ने ऑल इंडिया रैंक 68 हासिल कर स्कूल का मान बढ़ाया है।डीपीएस रांच की नव पदस्थापित प्राचार्या जया चौहान ने प्रसून प्रवर को विद्यालय आमंत्रित कर बुके प्रदान कर सम्मानित किया।प्राचार्या ने कहा कि प्रतिष्ठित जेईई की परीक्षा में प्रसून के द्वारा प्राप्त ऑल इंडिया रैंक 68 विद्यालय के अन्य बच्चों को भी काफी प्रेरित करेगा।प्रसून प्रवर डीपीएस रांची के प्रेप से ही छात्र रहे हैं एवं सतत हाइएस्ट अचीवर रहे हैं। उन्हें विद्यालय द्वारा प्रदत प्रत्येक रिकॉग्निशन यथा ब्लू बैज, ब्लू टाई, दो बलू ब्लैजर आदि मिलता रहा है। सीबीएसई टेंथ बोर्ड में विद्यालय के वह टॉपर रहे हैं। हाल ही संपन्न जेईई के दोनों मेंस में प्रसून का परसेंटाइल 99 प्लस रहा है। प्रसून ने जेईई मेन टू के(बी आर्क)में भी ऑल इंडिया रैंक 1052 हासिल किए हैं। सम्मान के वक्त प्रसून के साथ उपस्थित राजकीय पुरस्कार प्राप्त पीएम श्री स्कूल के प्राचार्य उदय कुमार सिंह एवं माता किरण सिंह ने भी डीपीएस प्राचार्या के प्रति कृतज्ञता जताते हुए आभार प्रकट किए।

जम्होर में विभिन्न स्थानों पर वट सावित्री पूजा धूमधाम से संपन्न

रिपोर्ट - प्रमोद कुमार सिंह

औरंगाबाद :- सदर प्रखंड स्थित ग्राम जम्होर के विभिन्न धार्मिक स्थानों पर अवस्थित पवित्र एवं पुण्य फल देने वाली बट वृक्ष की पूजा की गई।बट सावित्री व्रत के निमित्त श्रद्धालु महिलाएं सुबह सवेरे से ही विष्णु धाम के त्रि संकट निवारण वृक्ष, सिद्धनाथ बाबा परिसर में अवस्थित बट वृक्ष,खादी भंडार के गेट पर अवस्थित बट वृक्ष,इंटर विद्यालय जम्होर के पूर्वोत्तर किनारे पर अवस्थित बट वृक्ष सहित अन्य बट वृक्षो के नजदीक महिलाओं ने अपनी पति के लंबी उम्र की कामना हेतु विशेष पूजा अर्चना की। कहीं-कहीं अपने घर में भी वट वृक्ष स्थापित कर पूजा अर्चना की गई। विभिन्न स्थानों का अवलोकन करते हुए जिला हिंदी साहित्य सम्मेलन के उपाध्यक्ष सुरेश विद्यार्थी ने बताया कि यह महिलाओं का महान पर्व है सनातनी परंपरा का यह पर्व अपनी पति की लंबी उम्र की कामना हेतु की जाती है। बट वृक्ष में तीनों देव ब्रह्मा,विष्णु, महेश का वास होता है।इस वृक्ष के नीचे बैठकर पूजन, व्रत कथा आदि सुनने से मनवांछित मनोकामना की प्राप्ति होती है।यह वृक्ष अपनी विशालता के लिए प्रसिद्ध है।यह वृक्ष दीघार्यु व अमरत्व बोध के लिहाज से भी स्वीकार किया गया है।वट वृक्ष को ज्ञान व निर्वाण का भी प्रतीक माना जाता है।मौके पर साकेत कुमार सिंह,अमरचंद पांडेय,अनिल पांडेय कुंदन पाठक सहित अन्य उपस्थित थे।

जन सुराज पार्टी के वरीय नेता रमेश सिंह ने किया कई गांवों में जाकर जनसंपर्क किया

रिपोर्ट - प्रमोद कुमार सिंह

औरंगाबाद :- जन सुराज पार्टी के वरीय नेता रमेश सिंह ने किया कई गांवों में जाकर जनसंपर्क किया। बताते चले के पार्टी के वरीय नेता रमेश सिंह ने सोमवार को 223 - औरंगाबाद विधानसभा के अंतर्गत देव प्रखंड के ग्राम पंचायत बसडीहा के ग्राम रघुबीर बिगहा,मड़वा,दलेल बिगहा और आगे जनसंपर्क करते हुए देव प्रखंड के ग्राम पंचायत इसरौर के ग्राम - बेदाही , डोमन बिगहा , केश्वर बिगहा , कटैया में लोगों से घर है घर जाकर जनसम्पर्क किया और जन सुराज पार्टी की विचार धारा को जनता के बीच समझाने के बाद लोगों से रमेश सिंह ने कहा की जन सुराज पार्टी अगर बिहार विधानसभा में आयेगा तो पार्टी प्राथमिकता को पहली कैबिनेट में पास करेगी। आगे इन्होंने पार्टी के साथ 5 प्राथमिकताएं मिशन को भी जन - जन तक पहुंचाया, साथ हीं बिहार बदलाव हस्ताक्षर अभियान में सभी से मिलकर हस्ताक्षर करवाया। जो यह हस्ताक्षर बिहार के राज्यपाल को ज्ञापन के रूप में सौंपा जाएगा।

जिला पदाधिकारी की अध्यक्षता में मंडे फॉलो अप बैठक एवं जिला समन्वय समिति की बैठक का आयोजन किया गया

रिपोर्ट - प्रमोद कुमार सिंह

औरंगाबाद :- जिला पदाधिकारी श्री श्रीकान्त शास्त्री की अध्यक्षता में समाहरणालय के सभा कक्ष में मंडे फॉलो अप बैठक एवं जिला समन्वय समिति की बैठक का आयोजन किया गया। इस बैठक के दौरान जिला पदाधिकारी द्वारा जिले के विभिन्न विभागों द्वारा संचालित योजनाओं एवं सेवाओं की प्रगति की गहन समीक्षा की गई तथा सभी विभागीय पदाधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश प्रदान किए गए।

बैठक की शुरूआत में आयुष्मान भारत प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना तथा मुख्यमंत्री जन आरोग्य योजना के अंतर्गत अधिकाधिक पात्र लाभार्थियों को जोड़ने हेतु 26 मई से 28 मई 2025 तक चलाए जा रहे विशेष अभियान की समीक्षा की गई। जिला पदाधिकारी ने सभी प्रखंडों के नोडल पदाधिकारियों को स्पष्ट निर्देश दिया कि वे इस अभियान के दौरान आयुष्मान कार्ड निर्माण की सतत निगरानी करते हुए लाभुकों को योजना का लाभ सुनिश्चित कराएं।

इसके पश्चात मंडे फॉलो अप बैठक में विभागवार एजेंडा की पीपीटी प्रस्तुति के माध्यम से अवलोकन किया गया, तथा निष्पादन की दिशा में ठोस पहल करने हेतु संबंधित अधिकारियों को निर्देशित किया गया। जिला समन्वय समिति की बैठक में जिला लोक शिकायत निवारण अधिनियम के अंतर्गत जिला, सदर अनुमंडल तथा दाउदनगर अनुमंडल स्तर पर लंबित परिवादों की पीपीटी के माध्यम से समीक्षा की गई। सभी संबंधित अधिकारियों को निर्देश दिया गया कि वे अपने विभागों में लंबित मामलों की सूची प्राप्त कर उनका त्वरित निष्पादन सुनिश्चित करें।

समीक्षा के क्रम में यह पाया गया कि जिले में वर्तमान में सीपीग्राम्स से संबंधित तीन, ई-डैशबोर्ड पर 235 एवं जनता के दरबार में मुख्यमंत्रीह्व कार्यक्रम से संबंधित 84 आवेदन लंबित हैं। इस पर संज्ञान लेते हुए जिला पदाधिकारी ने सभी संबंधित अधिकारियों को लंबित आवेदनों का प्राथमिकता के आधार पर निष्पादन करने का निर्देश दिया।

लोक सेवा के अधिकार अधिनियम (आरटीपीएस) के अंतर्गत निवास, जाति, आय, ओबीसी, ईडब्ल्यूएस, जन्म एवं मृत्यु प्रमाण पत्र जैसी सेवाओं से संबंधित लंबित मामलों की समीक्षा की गई। जिला पदाधिकारी ने अंचल अधिकारियों एवं प्रखंड विकास पदाधिकारियों को निर्देशित किया कि वे लंबित आवेदनों का शीघ्र निष्पादन सुनिश्चित करें। साथ ही पेंशन, पारिवारिक लाभ, राशन कार्ड (ऑनलाइन एवं ऑफलाइन), एलपीसी जैसे आवेदनों की स्थिति की समीक्षा करते हुए संबंधित अनुमंडल पदाधिकारियों को अग्रेतर कार्रवाई करने का निर्देश दिया गया।

जिला विधि शाखा में लंबित उहखउ एवं टखउ वादों की विभागवार समीक्षा की गई। इस क्रम में जिला पदाधिकारी ने सभी विभागीय अधिकारियों को निर्देश दिया कि वे समयबद्ध रूप से प्रति शपथ पत्र दायर कर जिला विधि शाखा को आवश्यक प्रतिवेदन उपलब्ध कराएं, जिससे न्यायिक मामलों में यथासमय प्रभावी प्रत्युत्तर प्रस्तुत किया जा सके।

पेयजल एवं स्वच्छता विभाग (पीएचईडी) की समीक्षा के दौरान कार्यपालक अभियंता द्वारा अवगत कराया गया कि पंचायती राज विभाग से हस्तांतरित वार्डों में कुल 1163 टोलों में से 757 टोलों के लिए एनओसी प्राप्त हो चुकी है जबकि शेष 406 के लिए अंचल कार्यालयों से एनओसी की प्रतीक्षा है। जिला पदाधिकारी ने सभी संबंधित अंचल अधिकारियों को निर्देशित किया कि वे शीघ्र शेष एनओसी निर्गत करें, जिससे लंबित टोलों में कार्य प्रारंभ किया जा सके। समेकित बाल विकास सेवाएं (आईसीडीएस) अंतर्गत आंगनबाड़ी केंद्रों के भवन निर्माण, मरम्मत, पेयजल एवं शौचालय सुविधा की स्थिति की समीक्षा की गई। जिला पदाधिकारी ने सभी प्रखंड विकास पदाधिकारियों को निर्देशित किया कि आंगनबाड़ी केंद्रों के निर्माण एवं मरम्मत संबंधी कार्य पंचायत समिति फंड से शीघ्र संपन्न कराएं। स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण विभाग द्वारा जिले में हेल्थ एंड वेलनेस सेंटर की स्थापना हेतु भूमि चिह्नित कर शीघ्र एनओसी प्रदान करने का निर्देश सभी अंचल अधिकारियों को दिया गया। जिला पदाधिकारी द्वारा अन्य विभागों के कार्यों की भी क्रमवार समीक्षा की गई एवं संबंधित अधिकारियों को आवश्यक निर्देश प्रदान किए गए। बैठक के अंत में ह्डॉ. आंबेडकर समग्र सेवा अभियानह्व के अंतर्गत आयोजित शिविरों की समीक्षा की गई। शिविरों में प्राप्त आवेदनों के निष्पादन की प्रगति पर विशेष ध्यान देते हुए जिला पदाधिकारी ने निर्देशित किया कि सभी जिला स्तरीय पदाधिकारी अपने विभाग से संबंधित आवेदनों की सतत निगरानी करते हुए उनका शीघ्र निष्पादन सुनिश्चित करें। डीआरसीसी विभाग की धीमी निष्पादन प्रक्रिया पर असंतोष व्यक्त करते हुए जिला पदाधिकारी ने योजना पदाधिकारी को तत्परता से कार्य करने का निर्देश दिया। साथ ही नए राशन कार्ड हेतु प्राप्त आवेदनों का शिविर स्थल पर ही निष्पादन सुनिश्चित करने का निर्देश अनुमंडल पदाधिकारी को दिया गया। इस बैठक में उप विकास आयुक्त श्रीमती अनन्या सिंह, अपर समाहर्ता श्री ललित भूषण रंजन, अपर समाहर्ता एवं जिला लोक शिकायत निवारण पदाधिकारी श्री जयप्रकाश नारायण, बंदोबस्त पदाधिकारी श्री शैलेश कुमार, जिला भूर्जन पदाधिकारी श्री सच्चिदानंद सुमन, सिविल सर्जन श्री विनोद कुमार सिंह, वरीय उप समाहर्ता श्री मेराज जमील, श्रीमती रत्ना प्रियदर्शनी, सश्री बेबी प्रिया, श्री रितेश कुमार यादव, जिला योजना पदाधिकारी श्री अविनाश कुमार, डीपीओ आईसीडीएस श्रीमती विनीता कुमारी, सभी कार्यपालक अभियंता तथा वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से जिले के सभी अंचल अधिकारी, प्रखंड विकास पदाधिकारी, प्रखंड पंचायती राज पदाधिकारी एवं अन्य जिला स्तरीय पदाधिकारी उपस्थित रहे।

फर्नीचर के आड़ में शराब की तस्करी,ट्रक पर लोड 293 कार्टून विदेशी शराब का खेप जब्त

अररिया, अररिया की जोकीहाट थाना पुलिस ने रानी चौक एनएच 327 ई पर वाहन चेकिंग के क्रम में पश्चिम बंगाल से आ रही दिल्ली नंबर की एक ट्रक से भारी मात्रा में विदेशी शराबों का खेप बरामद किया। ट्रक पर शराब के खेप को लकड़ी के फर्नीचर के आड़ और ट्रक में बने गुप्त तहखाने में छिपाकर रखा गया था। पुलिस ने ट्रक से 293 कार्टून विदेशी शराब बरामद किया।इस बात की जानकारी एसपी अंजनी कुमार ने अपने कार्यालय कक्ष में सोमवार को आयोजित प्रेस वार्ता में जानकारी दी।मामले में ट्रक के चालक और उसके सहयोगी को भी गिरफ्तार किया गया। एसपी अंजनी कुमार ने जानकारी देते हुए बताया कि जोकीहाट थानाध्यक्ष राजीव झा को गुप्त सूचना मिली थी कि पश्चिम बंगाल से शराब का बड़ा खेप सड़क मार्ग से होकर गुजरने वाला है। सूचना पर रानी चौक एनएच 327ई के समीप पुलिस द्वारा नाका लगाकर वाहनों का चेकिंग शुरू किया गया।वाहन चेकिंग के क्रम में सिल्लीगुड़ी से आ रही ट्रक संख्या डीएल1एम-5588 को जब रुकने का इशारा किया गया तो पहले तो ट्रक के ड्राइवर गाड़ी को भगाना चाहा।लेकिन फिर गाड़ी को सड़क के किनारे खड़ी कर चालक और उसके सहयोगी उतरकर भागने लगे। जिसे पुलिस ने खदेड़कर पकड़ा। जिसके बाद ट्रक की तलाशी ली गई। ट्रक में उपर बेंत का फर्नीचर लोड था। फर्नीचर को हटाने पर ट्रक में बने तहखाने से काफी मात्रा में लोड अवैध विदेशी शराब बरामद किया गया। 293 कार्टून में 14 हजार 64 बोतल में कुल 2531.52 लीटर विदेश शराब बरामद किया गया। मामले में जोकीहाट थाना में कांड संख्या 167/2025 धारा-111 बीएनएस एवं 30 (ए) बिहार मद्य निषेध एवं उत्पाद अधिनियम के तहत दर्ज किया गया। मामले में गिरफ्तार ट्रक चालक संजीत पासवान पिता स्व. देवनाथ पासवान वैशाली जिला के बेलसर थाना क्षेत्र के अनिरुद्ध पतेरही वार्ड संख्या 14 का रहने वाला है। वहीं उसका सहयोगी उसी गांव का बिकास कुमार पिता स्व. जगनारायण पासवान है। छापेमारी टीम में जोकीहाट थानाध्यक्ष राजीव झा,एसआई बसंत कुमार सिंह, इमतियाज खान,एएसआई विनय कुमार सहनी,होमगार्ड जवान देवी लाल साह शामिल थे।

बारुण के अष्टभुजी धाम पिपरा में महा आरती धूमधाम से संपन्न

रिपोर्ट - प्रमोद कुमार सिंह

औरंगाबाद :- जिले के बारुण प्रखंड मुख्यालय से लगभग 12 किलोमीटर की दूरी पर अवस्थित प्रसिद्ध ग्राम पिपरा स्थित अष्टभुजी माता मंदिर के प्रांगण में ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष चतुर्दशी एवं अमावस्या के मिलन संयोग के मौके पर महाआरती का आयोजन किया गया। योग्य आचार्यों के सान्निध्य में वेद मंत्रोंच्चार के साथ माता अष्टभुजी एवं परिसर स्थित ग्राम देवी, हनुमान जी,भगवान विष्णु, माता लक्ष्मी,काली माता,शिव परिवार,विश्वकर्मा जी संत रैदास,गोवर्धन पहाड़ स्थित राधा कृष्ण सहित सभी देवी देवताओं की पंचोपचार विधि से पूजा अर्चना की गई।महा आरती में सैकड़ो ग्रामीण शामिल हुए।अष्टभुजी धाम महोत्सव आयोजन समिति के उपाध्यक्ष अजय कुमार के नेतृत्व में आयोजित महाआरती का संचालन संयोजक सुरेश विद्यार्थी द्वारा किया गया। सचिव राजा दिलीप सिंह,कोषाध्यक्ष रामेश्वर भगत,आलोक कुमार गुप्ता,संरक्षक अजीत मिश्रा के आतिथ्य भाव में महाआरती के मौके पर मुख्य अतिथि के रूप में बड़ेम नवीनगर के प्रख्यात समाजसेवी एवं नबीनगर विधानसभा एवं अन्य क्षेत्रों में आधा दर्जन से अधिक महोत्सव के संस्थापक एवं राजकीय दर्जा दिलाने में अहम भूमिका निभाने वाले संजीव कुमार सिंह की गरिमामई उपस्थिति रही।महा आरती के पश्चात संजीव कुमार सिंह ने अपने संबोधन के क्रम में कहा कि अष्टभुजी धाम पर आकर मैं अभीभूत हूं एवं इसके विकास के लिए हर संभव प्रयास करूंगा। जब लोगों ने स्थल की प्राचीनता के बारे में बताया तो उन्होंने कहा कि इसको राजकीय दर्जा दिलाने के लिए भरपूर प्रयास करूंगा। जनप्रतिनिधि नहीं रहते हुए भी मैं इस स्थल के विकास के लिए कृत संकल्पित हूं।ग्रामीण अर्जुन साव, सुरेंद्र प्रसाद, श्रीपति प्रसाद साहू, लाल मोहर प्रजापति सहित,कर्म देव पाल, बृजनंदन प्रजापति,नीतीश पांडेय,भोला राजवंशी फौदार रवानी,पत्रकार रवि कुमार,शिक्षक आनंद कुमार सहित अन्य लोगों ने मुख्य अतिथि को सभी मंदिरों का दर्शन कराया।आचार्य नीरज मिश्रा चंद्रमोहन मिश्रा,मधुसूदन त्रिवेदी द्वारा वेद मंत्रोंच्चार के साथ जब महा आरती की शुरूआत की गई तो श्रद्धालु भक्त भाव विह्वल हो गए।

कोसडीहरा में स्व.जगनारायण साव की स्मृति में शोक सभा का आयोजन किया गया

रिपोर्ट - अमरेन्द्र कुमार सिंह

अध्यक्ष रणविजय साव,सत्यानारायण साव,राजेन्द्र साव सुरेन्द्र प्रसाद,रामशिष साव दीपक कुमार,मंद साव,राजेश

गोह(औरंगाबाद) गोह प्रखंड के कोसड़ीहरा गांव में सोमवार को दोपहर स्वर्गीय जगनरायण साव की स्मृति में एक शोक सभा का आयोजन किया गया। इस सभा में कानू विकास संघ, जिला शाखा के पदाधिकारी एवं सदस्यगण उपस्थित हुए और दिवंगत आत्मा को श्रद्धांजलि अर्पित की।शोक सभा मे श्याम सुंदर जिला प्रवक्त इंद्र देव प्रसाद झ जिला संरक्षक सह प्रखंड साद,कृष्ण प्रसाद,बच्चन साव सहित कई लोग शामिल हुए।

सभा में स्व.जगनारायण साव के सामाजिक योगदान को याद करते हुए सभी ने दो मिनट का मौन रखकर श्रद्धांजलि दी। वक्ताओं ने कहा कि स्व.जगनारायन एक मिलनसार, समाजसेवी और संघर्षशील व्यक्ति थे, जिनकी कमी हमेशा खलेगी।शोकसभा का संचालन संगठन के सदस्यों द्वारा किया गया और सभा का समापन भावपूर्ण माहौल में हुआ।

मुंगेर में आस्था की आड़ में हिंसा, महमदा - गढ़ीरामपुर का मंदिर बना रणभूमि

आस्था, अंधविश्वास और स्वार्थ की तिकड़ी ने मिलकर इंसानियत को किया कलंकित

नयारामनगर थाना क्षेत्र में जमीन पर जंग, मंदिर बना रणभूमि

महमदा - गढीरामपुर गांव के बीच लड़ाई जमीन की या जमीर की ?

फिलहाल, यहां पर सब कुछ शांति शांति है...

रंजीत विद्यार्थी

मुंगेर : मुंगेर जिला अंतर्गत नयारामनगर थाना क्षेत्र के महमदा पाटम- गढीरामपुर में एक बार फिर आस्था, अंधविश्वास और स्वार्थ की तिकड़ी ने मिलकर इंसानियत को कलंकित कर दिया. मामला महमदा और गढ़ीरामपुर गांव के बीच का है. जहां चैती दुर्गा मंदिर और श्री राम जानकी ठाकुरबाड़ी की भूमि को लेकर लंबे समय से विवाद चला आ रहा है. समय-समय पर यहां दोनों गांव के बीच हिंसक घटनाएं भी घटती रही है. जो जिला प्रशासन एवं पुलिस के लिए परेशानियों का सबब है. ऐसे में सवाल उठना लाजिमी है कि भूमि किसकी ? चैती दुर्गा मंदिर की या श्री राम जानकी ठाकुड़बारी की ? लेकिन जवाब में निकलीं लाठियां, चले पत्थर और गूंजने लगीं हिंसा की आवाजे. पौराणिक प्रतिमा के आसन की जगह अब टूटी खिड़कियां, उखड़े दरवाजे और छतों से फेंके गए पत्थर रह गए हैं. महमदा पाटम और गढीरामपुर गांव के बीच तनाव को देखते हुए पुलिस घटनास्थल पर कैंप कर रही है. दंडाधिकारी की भी प्रतिनियुक्ति की गई है. आस्था के नाम पर हिंसा भरके नहीं, इसलिए जिला प्रशासन और पुलिस चौकस दिख रही है. पुलिस ने रविवार की रात्रि 08 लोगों को इस मामले में हिरासत में लेकर पूछताछ कर रही है. इसके अलावा हिरासत में लिए गए लोगों के इनपुट के आधार पर पुलिस घटना में शामिल अन्य लोगों की गिरफ्तारी के लिए संभावित ठिकानों पर छापामारी अभियान चला रही है. घटना के दूसरे दिन भी पुलिस कैंप कर रही है. नयारामनगर थाना अध्यक्ष तारकेश्वर प्रसाद सिंह स्वयं घटनास्थल पर पुलिस बल के जवानों के साथ मुस्तैयत दिखे. मुंगेर सदर एसडीपीओ अभिषेक आनंद ने भी घटना के दूसरे दिन घटनास्थल का मुयायना किया और अपने अधीनस्थ पुलिस पदाधिकारियों को आवश्यक दिशा निर्देश दिया.

नया नहीं है चैती दुर्गा मंदिर और श्री राम जानकी ठाकुरबाड़ी का विवाद

चैती दुर्गा मंदिर महमदा पाटम एवं श्री राम जानकी ठाकुरबाड़ी गढीरामपुर के बीच यह कोई नया विवाद नहीं है यह विवाद लंबे समय से चला आ रहा है जो समय-समय पर हिंसा का रूप भी लेता रहा है.

दरअसल, चैती दुर्गा मंदिर और ठाकुड़बारी की जमीन को लेकर पहले ही अदालती फैसला गढ़ी रामपुर के पक्ष में आ चुका था। मंदिर में दुर्गा प्रतिमा की स्थापना भी बंद कर दी गई थी। पर जब ठाकुड़बारी ट्रस्ट ने वहां राधा-कृष्ण प्रतिमा स्थापित करने की तैयारी की बस वहीं से फिर धार्मिक ज्वालामुखी फूट पड़ा. गेट बनाने की कोशिश की जा रही थी, लेकिन कुछ लोगों को ये गेट धर्म से ज्यादा जमीन की 'हदे' लांघता दिखा. रातों-रात गेट तोड़ा गया. फिर क्या था महमदा पाटम और गढीरामपुर गांव के बीच 'धार्मिक महाभारत' शुरू हो गई.

मंदिर टूटा और बिजली काटी, क्या यही है धर्म रक्षा ?

ट्रांसफार्मर से बिजली काट दी, ई-रिक्शा तोड़े, मोटरसाइकिल क्षतिग्रस्त किया गया,खिड़की-दरवाजे उखाड़ दिए, मंदिर में बैठे बच्चों के साथ गाली-गलौज की गई. पुलिस की मौजूदगी में ये ₹धार्मिक यज्ञ₹ शांत नहीं हुआ,बल्कि कायरता का 'प्रसाद' पुलिस के सामने ही बांटा गया.

पुलिस छावनी में तब्दील हुआ महमदा पाटम - गढीरामपुर गांव

मंदिर को क्षतिग्रस्त किए जाने की घटना के बाद महमदा पाटम और गढीरामपुर गांव पुलिस छावनी में तब्दील हो गया. एसपी सैयद इमरान मसूद के नेतृत्व में दर्जन भर थानों की फोर्स ने गांव में डेरा डाल दिया। महमदा गांव के कुल आठ लोगों को हिरासत में लिया गया. पूछताछ जारी है, पर जैसे ही लाठी रुकी, गाँव वालों ने पूछा : ₹अब हमारा मंदिर बचा या सिर्फ मलबा?₹

धर्म का चोला पहनकर हिंसा का खेल

आस्था जब अहंकार और कब्जे की भूख में बदल जाए, तो वह सिर्फ पूजा नहीं, राजनीति और निजी स्वार्थ का अखाड़ा बन जाती है। महमदा और गढ़ी रामपुर की लड़ाई सिर्फ एक जमीन की नहीं, बल्कि उस सोच की है, जो मंदिर को निर्माण नहीं, संघर्ष का केंद्र बना देती है।

बोले एसपी

एसपी सैयद इमरान मसूद ने लोगों से अपील किया है कि कानून अपने हाथ में ना ले. पुलिस अपना कार्य कर रही है. घटना में शामिल असमाजिक तत्व किसी भी कीमत पर बक्से नहीं जाएंगे. एसपी ने कहा कि असमाजिक तत्वों के बारे में किसी को कोई जानकारी मिले तो सीधे स्थानीय थाना को सूचना दें या मुझे सीधे भी दे सकते हैं. एसपी ने बताया कि फिलहाल पुरी तरह से स्थिति नियंत्रण में है.

राजनीतिक गरिमा और वक्त की नजाकत का सवाल

>> विचार

“ हिंदी पट्टी की राजनीति की प्रकृति को समझते हुए प्रधानमंत्री को इस मांग को मानने के लिए मजबूर होना पड़ा झवैसे भी इस साल के अंत में बिहार में विधानसभा चुनाव होने हैं। यह श्रेय पूरी तरह राहुल को जाता है कि उन्होंने मोदी को इस किस्म की कवायद की जरूरत स्वीकार करने के लिए मजबूर कर दिया। शायद राहुल को विश्वास हो चला है कि वे सरकार को ऑपरेशन सिंदूर पर भी सफाई देने के लिए मजबूर कर देंगेझ यह पूछकर कि भारत ने कितने विमान खोए; भारत और पाकिस्तान के बीच मध्यस्थता के लिए‘ट्रंप को क्यों बीच में डाला गया’;शेष दुनिया में कोई एक देश भी क्यों खुलकर भारत के समर्थन में खड़ा क्यों नहीं मिला? बकौल राहुल यह‘भारत की विदेश नीति ध्वस्त हो गई’ का नतीजा है।

ज्योति मल्होत्रा

पहलगाम में हुए नरसंहार के जवाब में भारत को पाकिस्तान पर दंडात्मक सैन्य कार्रवाई क्यों करनी पड़ी, दुनिया को यह समझाने के लिए भेजे जाने वाले बहुदलीय संसदीय प्रतिनिधिमंडल में शामिल होने को लेकर जो माहौल बना है, उसमें निश्चित तौर पर शालीनता की कमी देखी गई। शशि थरूर, मनीष तिवारी, सलमान खुर्शीद और अमर सिंह ने इन प्रतिनिधिमंडलों में शामिल होने के पीएम मोदी के आह्वान पर अपनी पार्टी, कांग्रेस से अलग होकर प्रतिक्रिया दी कांग्रेस द्वारा सरकार को भेजी गई सूची में उनके नाम नहीं थे। इस पुरानी पार्टी को इस मुद्दे पर जिस प्रकार किरकिरी झेलनी पड़ गई। इसका पूर्वानुमान उसे होना चाहिए था। सोचा भी नहीं जा सकता कि राहुल गांधी की कांग्रेस वही कांग्रेस है, जिस पर कभी इंदिरा गांधी का राज रहा था। साल 1971 में पाकिस्तान के साथ युद्ध करने से पहले के हफ्तों में, उन्होंने और उनके सबसे करीबी सहयोगियों ने कई महीनों तक कूटनीतिक अभियान चलाकर माहौल बनाया, ताकि पूर्वी पाकिस्तान (बांग्लादेश) में पैदा हुए मानवीय संकट को दुनिया के सामने रखा जा सके। साल 1994 की बात है, पीवी नरसिम्हा राव प्रधानमंत्री थे और भारत को कश्मीर मुद्दे पर जेनेवा में मानवाधिकार परिषद में आलोचनाओं का सामना करना पड़ रहा था - तब राव ने अटल बिहारी वाजपेयी को फोन करके पूछा कि क्या वे भारत का प्रतिनिधित्व करने वाले बहुदलीय प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व करेंगे। भारत के संसदीय इतिहास में वह क्षण एक तरह से राजनीतिक किंवदंती के रूप में याद किया जाता है झ 1994 में उप विदेश मंत्री रहे सलमान खुर्शीद, जो कोई भी उनसे मिलने आता, उसे यह बताने में कभी नहीं चूकते कि वाजपेयी के साथ काम करना कितना सहज है। साल 2018 में वाजपेयी के निधन के बाद खुर्शीद ने द प्रिंट नामक वेबसाइट को बताया : ‘हमें एक-दूसरे को मनाने की या बहस करने की कभी जरूरत नहीं पड़ी। सहज रूप से हमारी सोच एक-सी थी और वे (वाजपेयी) बहुत कमाल के इंसान थे उनके पास वह ‘मखमली स्पर्श’ था, जो एक प्रेरक नेता होने के लिए चाहिए। अब बहुत से लोग मोदी पर ‘मखमली स्पर्श’ विहीन होने का आरोप नहीं लगा सकते। निश्चित रूप से, मोदी का तरीका अपना संदेश सपाट रूप से संप्रेषित करने का है। होना तो यह चाहिए था कि मोदी फोन उठाकर कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे को कॉल करते और उनसे कहते : ‘भाई, मैं सोच रहा हूं कि भारत को इस घड़ी एक स्वर में दुनिया को बताना चाहिए कि पाकिस्तान के अंदर क्या चल रहा है; किस प्रकार हमारा यह पड़ोसी मुल्क कट्टरता और आतंकवाद का इस्तेमाल कर खेल कर रहा है; तिस पर यह धमकी कि कुछ

करके देखो परमाणु हथियार चला दूंगा, एक ऐसा खतरनाक घालमेल जिसके सामने किम जोंग उन जैसा भी फीका पड़ जाए। दुर्भाग्यवश, राष्ट्रहित में अहंकार और राजनीतिक मतभेद भुलाकर काम करने की क्षमता का प्रदर्शन करने वाला इस प्रकार का आह्वान इन दिनों संभव नहीं है। राजनीति के क्षेत्र में शालीनता की कमी ही अब इसकी पहचान बन चुकी है। कोई भी पक्ष दूसरे का सम्मान नहीं करता। पीएम मोदी का मानना है कि राहुल लोगों से कटे हुए वंशवादी नेता हैं, जिसे सीखने से परहेज है और बदतर यह कि पार्टी उन्हें हटा भी नहीं सकती, भले ही उनके नेतृत्व तले कांग्रेस चुनाव-दर -चुनाव हारती जा रही हो। उधर राहुल का मानना है कि पीएम मोदी लोकतांत्रिक संस्थाओं के सबसे बड़े विध्वंसक हैं। सार्वजनिक मंचों से दोनों एक-दूसरे की बेइज्जती करने का कोई मौका नहीं छोड़ते। जब वे एक-दूसरे से भिड़ नहीं रहे होते, तब उनके करीबी सहयोगी यह कमी पूरी करते हैं। देश के दो शीर्ष नेताओं के बीच ताने, कटाक्ष, सरासर बेइज्जूजती करना झ यह सब देखना सुखद नहीं। सब जानते हैं कि राजनीति कोई पिकनिक नहीं और न ही अब वह जमाना है कि कोई एक मारे तो दूसरा गाल आगे कर देना इसकी प्रमुख धारणा हो। लेकिन इंदिरा गांधी और नरसिम्हा राव, दोनों ही समझते थे कि विदेश नीति एक व्यापक इंद्रधनुष है, जो हमारे जीवन के विभिन्न रंगों को खुद में समाहित करने में सक्षम है। भले ही कांग्रेस ने प्रधानमंत्री मोदी द्वारा अपने प्रमुख सांसदों को सीधे आमंत्रित करने को सियासी खेल करने के रूप में लिया हो, लेकिन वह इसे हज्म करते हुए प्रधानमंत्री से कह सकती थी कि विश्व को भारत का पक्ष समझाने में कांग्रेस भारतीय प्रयासों की- भाजपा के नहींझ बराबर की सहयोगी बनेगी। राहुल का तरीका यह है कि जन-जन तक अपनी पहुंचाने के लिए वे बहुत दिलचस्प मुद्दे उठाते रहते हैं, मसलन जातिवार जनगणना। हिंदी पट्टी की राजनीति की प्रकृति को समझते हुए प्रधानमंत्री को इस मांग को मानने के लिए मजबूर होना पड़ा झवैसे भी इस साल के अंत में बिहार में विधानसभा चुनाव होने हैं। यह श्रेय पूरी तरह राहुल को जाता है कि उन्होंने मोदी को इस किस्म की कवायद की जरूरत स्वीकार करने के लिए मजबूर कर दिया। शायद राहुल को विश्वास हो चला है कि वे सरकार को ऑपरेशन सिंदूर पर भी सफाई देने के लिए मजबूर कर देंगेझ यह पूछकर कि भारत ने कितने विमान खोए; भारत और पाकिस्तान के बीच मध्यस्थता के लिए‘ट्रंप को क्यों बीच में डाला गया’;शेष दुनिया में कोई एक देश भी क्यों खुलकर भारत के समर्थन में खड़ा क्यों नहीं मिला? बकौल राहुल यह‘भारत की विदेश नीति ध्वस्त हो गई’ का नतीजा है। लेकिन क्या ऐसा ही है? भगवान जाने कि क्या पूरा देश वही जानना चाहता है, जो राहुल जानना चाहते हैं। लेकिन सभी राजनेताओं को समय की नज़ाकत की समझ होनी चाहिए। फिलहाल तो जनता का मूड यही है कि पहलगाम में हुए नरसंहार का बदला लिया जाए। यह संदेश कि भारत निर्दोष लोगों की हत्या को और बर्दाश्त नहीं करेगा, पूरी तरह से दिया जा चुका है- रहीम यार खान एयरबेस के रनवे को बींधकर रख देना, पाकिस्तान के रणनीतिक कमांड से कुछ ही दूरी पर स्थित सरगोधा और नूर खान हवाई अड्डे पर बमबारी करनाझ इनमें निहित ऐसे कई संदेश हैं जिनसे बाकी दुनिया को अवगत कराना बाकी है। जहां तक यह सवाल कि क्या ट्रंप ने भारत-पाक संघर्ष में ‘मध्यस्थता’ की और क्या भारत को इसे अपनी बेइज्जती मानना चाहिए कि उनके विदेश मंत्री माकी रुबियो ने 10 मई की सुबह अपने भारतीय और पाकिस्तानी समकक्षों को एक के बाद एक कई फोन किए झ तो, अब समय आ गया है कि भारतीय राजनीतिक वर्ग बुनियादी विदेश नीति का एक छोटा-सा पाठ सीख ले। तथ्य यह है कि दुनिया के नेता हमेशा एक-दूसरे के संपर्क में रहते हैं। कई लोग शायद इस बात से चिंतित थे कि कहीं भारत के हमले ऐसे मोड में न तब्दील हो जाएं, जो भगवान न करे, एक ‘परमाणु फ्लैश पॉइंट’ बन जाए। यह शायद सच है कि जब 7 मई को टकराव शुरू हुआ, तब भारत ने पाक के एयरबेसों पर हमला करने के बारे में नहीं सोचा था झ यह 8 मई को पाकिस्तान द्वारा बारामूला से लेकर भुज तक ड्रोनों- मिसाइलों से हमलों के जवाब में करना पड़ा, जिसमें आदमपुर भी शामिल था। स्वाभाविक है कि चिंतित हुए वैश्विक नेता ऐसे पलों में भारत और पाकिस्तान के नेताओं को फोन करके शांति बनाने को कहते झ क्या आप भी ऐसा नहीं करते, यदि दोनों आपके दोस्त होते? लेकिन यह भी तथ्य है कि जब तक ट्रंप के सहयोगी पूरी तरह हरकत में आते, तब तक भारतीय वायु सेना अपना काम निबटा चुकी थी। कुछ घंटों बाद, पाकिस्तानी डीजीएमओ ने भारत के डीजीएमओ लेफ्टिनेंट जनरल राजीव घई को फोन किया और शांति स्थापना की गुहार लगाई। राहुल ने जो भी सवाल उठाए हैं, उनका भी समय आएगा। इस बीच, यहां देखें कि उनके साथी कांग्रेस सांसद मनीष तिवारी ने मोदी के निमंत्रण पर ‘हामी’ भरने वाले अपने ट्वीट में क्या कहा है, जिसमें उन्होंने 1975 की फिल्म ‘आक्रमण’ के गीत के इस एक मुखड़े का हवाला देते हुए पुष्टि की कि वे ऑपरेशन सिंदूर के बाद विदेश जाने वाले प्रतिनिधिमंडल का हिस्सा बनना चाहेंगे : ‘देखो वीर जवानों अपने खून पर ये इल्जाम न आए, मां न कहे कि मेरे बेटे वक्त पड़ा तो काम न आए। तिवारी, थरूर, सिंह और खुर्शीद भले ही हमारे वक्त के ‘अमर, अकबर, एंथनी’ हों या न हों, लेकिन उन्होंने अपने-अपने तरीके से शेष देश को राह दिखाई है।

संपादकीय

ईडी की विश्वसनीयता

यह कोई नई बात नहीं है कि देश की जांच एजेंसियों पर सरकार की आकांक्षाओं के अनुरूप कार्य करने को लेकर विपक्षी राजनीतिक दलों की तरफ से पक्षपात के आरोप लगे हों। सरकारी जांच एजेंसियों को वे विपक्ष के नेताओं को डराने-धमकाने का हथियार बताते रहे हैं। अब इन्हीं चिंताओं और सवालों पर देश की शीर्ष अदालत ने भी मोहर लगाई है। विपक्षी नेता खासकर धनशोधन निरोधक अधिनियम के तहत की जा रही कार्रवाइयों पर रोक लगाने की गुहार लगाते रहे हैं। उनका आरोप रहा है कि प्रवर्तन निदेशालय सरकार के हितों की पूर्ति के लिये दुराग्रह से कार्रवाई करता है। हालांकि, अदालत का मानना रहा है कि भ्रष्टाचार, देशविरोधी गतिविधियों तथा आतंकवादी संगठनों को मदद पहुंचाने वालों के खिलाफ कार्रवाई अतार्किक नहीं है। सवाल इस बात को लेकर भी उठते रहे हैं जितने आरोप पत्र ईडी द्वारा दायर किए जाते हैं, उसकी तुलना में दोषसिद्धि की संख्या में बेहद ज्यादा अंतर क्यों है। जो इस बात की ओर इशारा करता है कि मामले दुराग्रह से प्रेरित होते हैं। अदालत भी मानती है कि ठोस प्रमाण के बिना किसी के खिलाफ कार्रवाई नहीं होनी चाहिए। लेकिन एक हालिया मामले में प्रवर्तन निदेशालय की कारगुजारियों पर कोर्ट ने उसे कड़ी फटकार लगाते हुए सीमाएं लांघकर संघीय ढांचे के अतिक्रमण करने की बात कही है। कोर्ट ने यह टिप्पणी तमिलनाडु में शराब की दुकानों के लाइसेंस देने में बरती गई कथित धांधली में राज्य विपणन निगम के विरुद्ध धनशोधन मामले में ईडी की जांच पर की है। दरअसल, निगम द्वारा शीर्ष अदालत में मामला ले जाए जाने पर सुप्रीम कोर्ट ने न केवल जांच रोकी बल्कि ईडी की कारगुजारियों पर सख्त टिप्पणियां भी की हैं। निस्संदेह, ईडी को इस सुप्रीम नसीहत पर गंभीरता से विचार करना चाहिए। कोर्ट को यहां तक कहना पड़ा कि प्रवर्तन निदेशालय संघीय अवधारणा का उल्लंघन कर रहा है। उल्लेखनीय है कि पीएमएलए की धाराओं के दुरुपयोग को लेकर शीर्ष अदालत पहले भी ईडी के खिलाफ सख्त टिप्पणी कर चुकी है। निस्संदेह, अदालत की इस सख्त टिप्पणी से उन तमाम विपक्षी दलों को संबल मिलेगा जो आए दिन ईडी व अन्य जांच एजेंसियों का सत्तापक्ष द्वारा दुरुपयोग करने का आरोप लगाते थे। वहीं दूसरी ओर तमिलनाडु राज्य विपणन निगम की दलील थी कि जिन शराब की दुकानों के लाइसेंस देने में अनियमितताओं के मामले में ईडी ने हस्तक्षेप किया है, उसमें वर्ष 2014 से कार्रवाई की जा रही है। साथ ही इस मामले में चालीस से अधिक प्राथमिकी दर्ज की जा चुकी हैं। वहीं निगम कई मामलों में शिकायतकर्ता है। ऐसे में इस मामले में ईडी के कूदने पर सवाल उठे हैं। यही वजह है कि कोर्ट ने ईडी की इस जांच पर रोक लगा दी है। उल्लेखनीय है कि तमिलनाडु सरकार भी ईडी की कार्रवाई को संवैधानिक अधिकारों व संघीय ढांचे का उल्लंघन बताती रही है। विश्वास किया जाना चाहिए कि कोर्ट की सख्त टिप्पणी के बाद ईडी केंद्र की इच्छाओं के अनुरूप आंख बंद कर कार्रवाई करने की बजाय अपनी कार्यशैली में अपेक्षित परिवर्तन करेगी।

जड़ों से उखड़े लोगों को फिर से बसाने की चुनौती

सुरेश सेठ

पिछले दिनों ऑपरेशन सिंदूर ने पहलगाम आतंकी की विधवाओं और आतंकवाद से लड़ते शहीद हुए जवानों की विधवाओं का दर्द कम करने और अनाथ हुए बच्चों को संबल देने की कोशिश की। सत्ता से जुड़ी आवाजें दावा करती हैं कि प्रतिकार हो गया, आततायियों को सबक सिखा दिया गया। लेकिन उन लोगों के दर्द का क्या, जो सरहद के गांवों से विस्थापित होकर अपने घर-बार समेट कर अनजाने ठिकानों की ओर चल पड़े? पंजाब की सीमाओं पर तो ऐसे खेत भी हैं जो आधे हिस्से में सरहद के पार चले जाते हैं। कहीं फसलें समय से पहले काट ली गईं, और जहां नहीं काटी जा सकीं, वहां न केवल फसलें तबाह हुईं, जिससे किसानों की मेहनत भी मिट्टी में मिल गई। उखड़ना और फिर से बसना-शायद यही इन लोगों की नियति बन गई है। युद्धविराम के बाद कुछ सरहदी गांवों के लोग जब लौटे, तो उन्हें तबाही का मंजर देखना पड़ा। इस हिंसा के साथ एक और डरावना पहलू भी जुड़ा था- आतंकी और माफिया गिरोहों की हिंसा, जिन्होंने सीमावर्ती क्षेत्रों में अपनी गैर-कानूनी गतिविधियों का जाल फैला रखा है। ये लोग दिनदहाड़े लूटमार करते हैं और लोगों को उनके अपने घरों में ही पराया बना देते हैं। बाढ़, तूफान और हिंसक घटनाएं आम लोगों के जीवन का कटु सत्य बन चुकी हैं। कुल मिलाकर, जो लोग दुर्भाग्यवश अपनी जड़ों से उखड़ गए हैं, उनकी संख्या लाखों तक पहुंच चुकी है। ये विस्थापन न केवल युद्ध और आतंकवाद के कारण हुआ, बल्कि जलवायु परिवर्तन, वनों की कटाई और भूमि-क्षरण जैसी प्राकृतिक आपदाओं ने भी इस त्रासदी को बढ़ाया। किसान सिर्फ शांति का इंतजार नहीं करता; वह अपनी फसल के लिए समय पर पानी

और कटाई के समय साफ मौसम की आशा करता है। लेकिन हालात उलटे हो गए-जहां शांति चाहिए थी, वहां हिंसा मिली; जब पानी की जरूरत थी, तब सूखा पड़ा, और मौसम साफ के समय इतनी मूसलाधार बारिश हुई कि बादल फटने लगे। उधर मणिपुर में भी एक छद्म युद्ध आतंकियों द्वारा जातिगत आरक्षण के मुद्दे को लेकर लड़ा जा रहा है। आगजनी और हिंसा के चलते वर्ष 2024 में मणिपुर से हजारों लोग विस्थापित हुए। जिनेवा स्थित मॉनिटरिंग सेंटर के अनुसार, केवल असम में ही पिछले एक दशक में आई भीषण बाढ़ों के कारण 25 लाख लोग आंतरिक विस्थापन का शिकार हुए हैं। इसी तरह, देशभर में आए भीषण चक्रवातों ने 16 लाख से अधिक लोगों को उजाड़ दिया। बंगाल की खाड़ी में अक्तूबर 2024 के अंत में आए चक्रवात ‘दाना’ ने 10 लाख से अधिक लोगों को विस्थापित कर दिया। त्रिपुरा का भी यही हाल रहा है। पिछले 40 वर्षों में प्रतिकूल मौसम की वजह से वहां 3.15 लाख लोग अपने घरों से उजड़ चुके हैं। पश्चिम बंगाल में आए चक्रवात ‘रेमल’ ने 2 लाख 8 हजार लोगों को उनके घर-द्वार छोड़ने के लिए मजबूर कर दिया था। इसके साथ ही ब्रह्मपुत्र और उसकी सहायक नदियों के उफान के कारण लगभग 3 लाख 38 हजार लोग विस्थापित हुए हैं। निस्संदेह, ऑपरेशन सिंदूर सफल रहा, लेकिन इस कार्रवाई से सीमा पर बसे लोगों से लेकर दूर-दराज़ के क्षेत्रों तक की जिंदगियां अव्यवस्थित हो गईं। लोग फिर से अपनी जड़ों से उखड़ने को मजबूर हो गए। जंग, आखिर जंग होती है। आज जब हम सामान्य जीवन की ओर लौटने की कोशिश कर रहे हैं, यह सोचना जरूरी है-क्या इन उखड़े हुए लोगों को फिर से उनकी जड़ें मिलेंगी? क्या उनके वे सपने, जो बारूद की गंध में घुलकर टूट गए या बिखर गए, दोबारा संवर पाएंगे? जिन नौजवानों की आंखों से भविष्य की चमक धुंधला गई है, उसका समाधान कैसे होगा? स्पष्ट है कि न युद्ध से, न प्रदूषणजनित अव्यवस्था से और न ही प्राकृतिक आपदाओं से मानवीय संकट को दूर करने के गंभीर प्रयास हो रहे हैं। इस दिशा में सत्ता की संवेदनशीलता अपरिहार्य है। इस संसार के नीति-नियंताओं को यह सोचना होगा कि आम लोगों की ज़िंदगी में फिर से सपनों में रंग कैसे भरे जाएं। उन युवाओं के लिए उम्मीद की कोई बुनियाद रखनी होगी, जो गांवों से शहर और शहरों से फिर गांव लौटने को मजबूर हैं, जो परदेस में ज़िंदगी की तलाश में जाते हैं और वहां उन्हें अपराधियों की तरह बेड़ियों में वापस भेज दिया जाता है। अब जरूरी है कि उनके लिए ‘सपनों की बागवानी’ की जाए। यह बागवानी भी उन्हीं हाथों से होनी चाहिए, जिन्होंने औरतों के खोए हुए सिंदूर के प्रतिकार स्वरूप आतंकवाद पर प्रहार किया था। खंडित सपनों को पूरा करने के लिये नई मंज़िलों का निर्माण हो-ऐसी मंज़िल जिसमें साधारण व्यक्ति को भी वही स्थान मिले, जो सदियों से सत्ता और वर्चस्व के अभ्यस्त लोगों को मिलता आया है।

(लेखक साहित्यकार हैं।)

परंपरा से पर्यावरण रक्षा

रतन सिंह

मायरा यानी भात भरने की परम्परा में भी जुड़ा है पर्यावरण प्रेम। भात भरना एक परंपरा है। हमारे देश में बहन की पुत्री या पुत्र की शादी में मायरा भरने की परम्परा सदियों पुरानी है। कोई भी महिला अपने पुत्र या पुत्री की शादी तय होते ही गुड़ की भेली व चावल लेकर मायके जाती है और अपने भाई को देते हुए उसे शादी में आने के लिए आमंत्रित करती है। भाई अपनी आर्थिक स्थिति के अनुसार उपहार आदि लेकर जाता है, इसी को भात भरना या मायरा भरना कहा जाता है। इस अवसर पर बहन शादी में आये अपने भाई का स्वागत करती है और भाई चुनड़ी ओढ़ा कर बहन का सम्मान करता है। एक ओर भाई-बहन का प्रेम है और दूसरी ओर बहन के बच्चों यानी भानजे-भानजियों के प्रति ननिहाल का प्रेम। राजस्थान या कहीं और के भी कई रिवाज ऐसे हैं जहां परंपरा में पर्यावरण का प्रेम छलकता है। राजस्थान में भाई जब भात लेकर बहन के ससुराल जाता है तब सबसे पहले गांव की सीमा में घुसते ही खेजड़ी के पेड़ को चुनड़ी ओढ़ाता है। उल्लेखनीय है कि भात भरने में सबसे महत्वपूर्ण रस्म बहन को चुनड़ी ओढ़ाना होता है और ठीक यही रस्म गांव की सीमा जिसे स्थानीय भाषा में कांकड बोलते है, में प्रवेश करते ही भाई खेजड़ी

के पेड़ को चुनड़ी ओढ़ा कर उसे सम्मान देता है। जो प्रदेश के लोगों के मन में पर्यावरण के प्रति प्रेम और जागरूकता को प्रदर्शित करता है। अर्थात् पेड़ों को सहेजने की प्रथा। राजस्थान में खेजड़ी के पेड़ को पर्यावरण की दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण समझा जाता है। दरअसल, जो भाई खेजड़ी वृक्ष को अपनी बहन के समान समझता है, जाहिर है वह उसका संरक्षण ही करेगा और खेजड़ी वृक्ष का संरक्षण मतलब पर्यावरण का संरक्षण। इस तरह राजस्थान में सदियों पहले यह परम्परा बनाई गई और खेजड़ी के वृक्ष को बहन का दर्जा दिया गया ताकि कोई भी व्यक्ति उसे नुकसान पहुंचाने की न सोचे। राजस्थान में ऐसी और भी कई परम्पराएं है जो सीधे सीधे पर्यावरण से जुड़ी हैं। प्रसंगवश यहां बता दें कि देश के अन्य हिस्सों में पर्यावरण को बचाये रखने के लिए या पर्यावरण की महत्ता को दर्शाने के लिए ऐसे अनेक रीति-रिवाज हैं जो लोगों को जागरूक करने या धर्म अथवा आस्था से जोड़कर पर्यावरण को संवारने का संकल्प जाहिर करवाते हैं।

स्वामित्वाधिकारी, मुद्रक , प्रकाशक व संपादक सरोज चौधरी द्वारा न्यू लोक भारती प्रेस, वार्ड 10 कोकर औद्योगिक क्षेत्र कोकर रांची से मुद्रित तथा ई -37, अशोक विहार रांची से प्रकाशित, संस्थापक संपादक :स्व. राधाकृष्ण चौधरी
प्रबंध संपादक : अरूण कुमार चौधरी, फोन: 9471170557/08084674042, ई-मेल : Divyadinkarranchi @ gmail.com,RNI Regd. No. : JHAHIN/2013/54373Postal Registration No. : RN-11/2012)

संक्षिप्त समाचार

राजद के प्रदेश महासचिव पंकज कुमार यादव को गोली मारने वाला अपराधी गिरफ्तार

गिरफ्तार आरोपी के पास से एक देसी कट्टा व चार जिंदा कारतूस बरामद

दिव्य दिनकर संवाददाता

मुंगेर : राजद के बिहार प्रदेश महासचिव पंकज कुमार यादव को बीते 03 अक्टूबर 2024 को मॉर्निंग वॉक के दौरान गोली मारने वाला मिट्ठू यादव को पुलिस ने बीती रात्रि गिरफ्तार किया है. मुंगेर एसपी सैयद इमरान मसूद ने प्रेस कांफ्रेंस आयोजित कर पत्रकारों को बताया कि विगत 03 अक्टूबर को कासिम बाजार थाना में कासिम बाजार थाना क्षेत्र के नवटोलिया निवासी राम चरित्र प्रसाद के पुत्र पंकज कुमार के द्वारा दिए गए फर्द बयान में बताया गया कि सफिया सराय हवाई अड्डा मैदान में टहलने के दौरान अपाची मोटरसाइकिल पर सवार दो व्यक्ति नवटोलिया निवासी शिवनारायण यादव के पुत्र मिट्ठू यादव व नरेश यादव के पुत्र नमन कुमार के द्वारा जान करने के नियत से उनके ऊपर गोली चलाई गई. जिसमें गोली लगने के बाद वह जख्मी हो गए. एसपी ने बताया कि इस घटना के संबंध में पंकज कुमार के फर्द बयान के आधार पर कासिम बाजार थाना कांड संख्या 280 /24 के तहत एफआईआर दर्ज किया गया था। इस कांड में संलिप्त अपराध कर्मी कासिम बाजार थाना क्षेत्र के नवटोलिया निवासी शिवनारायण यादव के पुत्र मिट्ठू यादव ,जो कांड दर्ज होने के बाद फिरार चल रहे थे .उस-के घर पर होने की सूचना मिली .तत्पश्चात सूचना मिलते ही कासिम बाजार थानाध्यक्ष रूबिकांत कच्छप एवं एसटीएफ सहित अन्य पुलिस बलों व पटना तकनीकी टीम के साथ एक विशेष टीम का गठन किया गया. विशेष टीम द्वारा आसूचना संकलन एवं तकनीकी विश्लेषण के आधार पर कांड में संलिप्त अपराध कर्मी नवटोलिया निवासी शिवनारायण यादव के पुत्र मिट्ठू यादव के घर पर विधिवत छापेमारी की गई .जिसमें मिट्ठू यादव पुलिस को देखकर भागने लगा. पुलिस टीम द्वारा पीछा करने के बाद धर दबोचे गए अभियुक्त के पास से एक देसी कट्टा व चार जिंदा कारतूस बरामद हुआ. उसके बाद मिट्ठू यादव को गिरफ्तार किया गया. बता दें कि कांड में फिरार चल रहे अभियुक्तों की गिरफ्तारी हेतु लगातार छापेमारी की जा रही थी. परिणाम स्वरुप कांड में फरार चल रहे एक अभियुक्त नरेश यादव के पुत्र नमन कुमार ने विगत वर्ष 25अक्टूबर को ही माननीय न्यायालय में आत्मसमर्पण कर दिया था .गिरफ्तार अभियुक्त के द्वारा घटना में अपनी संलिप्तता स्वीकार की गई है .इस कांड के अन्य बिंदुओं पर जांच की जा रही है. छापेमारी दल में अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी मुंगेर अभिषेक आनंद, कासिम बाजार थानाध्यक्ष सहित अन्य पुलिस पदाधिकारी एवं सशस्त्र बल व एसटीएफ जमालपुर की टीम शामिल थी.

बेगूसराय में बिना वारंट पत्रकार के घर कार्रवाई करने पहुंची पुलिस, लोगों ने बनाया बंधक

ग्रामीणों ने जमकर हंगामा भी किया.

बार फिर पुलिस की कार्यशैली पर सवाल खड़ा होने लगा है.

बिना वारंट के एक पूर्व सैनिक और यूट्यूब पत्रकार संतोष राय के घर पहुची थी

रणजीत विद्यार्थी

बेगूसराय (मुंगेर): मुंगेर प्रमंडल अंतर्गत बेगूसराय जिला के बलिया थाने की पुलिस पूर्व सैनिक सह यूट्यूब पत्रकार के घर बिना वारंट के पहुंची थी. तभी गांव के लोगों ने पुलिस को बंधक बनाकर पुलिस के सामने ही पुलिस के खिलाफ जमकर हंगामा शुरू कर दिया. मिली जानकारी के अनुसार, तकरीबन 04 घंटे तक पुलिस को वहां के स्थानीय लोगों ने बंधक बनाकर हंगामा किया. वहीं पुलिस उस जगह काफी बेवस नजर आई. पूरे मामले का वीडियो अब सोशल मीडिया पर तेजी से वायरल हो रहा है. बताते चलें कि बलिया थाना क्षेत्र के सदानंदपुर गांव में पुलिस को बंधक गया था.

बताया जा रहा है कि पूर्व सैनिक एवं यूट्यूब पत्रकार संतोष राय के घर पर काफी संख्या में उसे पकड़ने के लिए पुलिस पहुंची थी. तभी लोगों ने पुलिस के खिलाफ हंगामा किया और वारंट मांगना शुरू कर किया. इस दौरान पुलिस उसके खिलाफ वारंट नहीं दिखा पाई. जिसके कारण लोग भड़क गए और पुलिस को बंधक बना लिया. फिर वहां जमकर हंगामा शुरू कर दिया. बता दें कि यह वीडियो अब सोशल मीडिया पर तेजी से वायरल हो रहा है. जिसमें देखा गया कि बलिया थाने की पुलिस को लोगों ने बंधक बनाकर लोग उस-के सामने ही जमकर हंगामा कर रहे हैं. हालांकि कई घंटे तक पुलिस को लोगों का आक्रोश झेलना पड़ा और किसी तरह से उस जगह से बलिया थाने की पुलिस निकाला पड़ा. वहीं, लोगों का कहना है कि बेवजह पूर्व सैनिक एवं यूट्यूब पत्रकार संतोष राय को तंग किया जा रहा है. उसे पर झूठा मुकदमा दर्ज किया जा रहा है. लोगों ने बताया कि अचानक बिना वारंट के ही पकड़ने के लिए काफी संख्या में पुलिस, पूर्व सैनिक एवं यूट्यूब पत्रकार संतोष राय के घर पर पहुंच गई. जब लोगों ने उसके खिलाफ वारंट मांगा, तो पुलिस ने वारंट नहीं दिखाई. लोगों ने बताया है कि पुलिस की गुंडागर्दी बेगूसराय में चरम पर है. बेवजह पुलिस पूर्व सैनिक एवं यूट्यूब पर पत्रकार को तंग कर रहे हैं.

भारत आतंकवाद को बख्शेगा नहीं : रूडी की दोहा में दो टूक

रूडी ने कतर में रखा भारत का रुख, कहा-आतंकी और उन्हें पालने वाले एक समान

सांसद सुप्रिया सुले के नेतृत्व में बहुदलीय भारतीय प्रतिनिधिमंडल की कतर यात्रा

राजीव प्रताप रूडी की प्रमुख भागीदारी

अनुराग ठाकुर, कांग्रेस के वरिष्ठ नेता व पूर्व मंत्री आनंद शर्मा और कांग्रेस सांसद मनीष तिवारी शामिल

नई दिल्ली । पूर्व केंद्रीय मंत्री और सारण से सांसद राजीव प्रताप रूडी बहुदलीय संसदीय प्रतिनिधिमंडल के साथ कतर की आधिकारिक यात्रा पर हैं, जिस-का नेतृत्व सांसद सुप्रिया सुले कर रही हैं। दोहा पहुँचने पर भारतीय राजदूत विपुल द्वारा प्रतिनिधिमंडल का गर्मजोशी से स्वागत किया गया। इस अवसर पर दूतावास परिसर में महात्मा गांधी की प्रतिमा पर पुष्पांजलि अर्पित कर भारत की शांति और सहिष्णुता की परंपरा को सम्मानित किया गया। प्रतिनिधिमंडल ने कतर की शूरा परिषद की उपाध्यक्ष महामहिम डॉ. हमदा अल सुलैती तथा अन्य कतरी सांसदों से संवाद किया। चर्चा के दौरान 22 अप्रैल को जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में हुए आतंकी हमले के संदर्भ में भारत की चिंता और दृढ़ रुख से अवगत कराया गया। सांसद रूडी के साथ इस प्रतिनिधिमंडल में विभिन्न राजनीतिक दलों के प्रमुख प्रतिनिधि शामिल हैं जिसमें आप सांसद विक्रमजीत सिंह साहनी, कांग्रेस स-ांसद मनीष तिवारी, भाजपा सांसद अनुराग सिंह ठाकुर, टीडीपी सांसद लवु कृष्ण देवतरायालु, कांग्रेस सांसद आनंद शर्मा, वी मुरलीधरन और सैयद अकबरुद्दीन है। इस अवसर पर राजीव प्रताप रूडी ने कहा कि भारत ने स्पष्ट कर दिया है कि वह परमाणु धमकियों से नहीं डरता। यदि भारत पर कोई आतंकी हमला हुआ, तो हम उसका मुंहतोड़ जवाब देंगे। भारत आतंकवाद और आतंकवाद को प्रश्रय देने वाले देशों में कोई भेद नहीं करता। कतर ने भी अपनी आतंकवाद विरोधी शून्य सहिष्णुता नीति को दोहराते हुए अंतरराष्ट्रीय स्तर पर आतंकवाद की एकजुट निंदा की आवश्यकता पर बल दिया। दोहा प्रस्थान से पूर्व दिल्ली एयरपोर्ट पर श्री रूडी ने कहा कि भारत आज भी पाकिस्तान प्रायोजित आतंकवाद से संघर्ष कर रहा है। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में हमने आतंकियों को करारा जवाब दिया है। यह प्रतिनिधिमंडल स्पष्ट संदेश लेकर जा रहा है कि पाकिस्तान एक आतंकवादी देश है जो आतंकियों को पनाह देता है। प्रतिनिधिमंडल आगे मिस्र, इथियोपिया और दक्षिण अफ्रीका की यात्रा भी करेगा, जहां भारत की विदेश नीति और वैश्विक आतंकवाद पर रुख को और विस्तार से प्रस्तुत किया जाएगा।

धूमधाम से मना वट सावित्री व्रत, महिलाओं ने वट वृक्ष की विधिवत की पूजा अर्चना

जमालपुर। जमालपुर के कई हिस्सों में सोमवार को वट सावित्री व्रत धूमधाम के साथ मनाया गया। महिला व्रतियों ने वटवृक्ष की पूजा कर अपने पति की लंबी आयु की कामना की। वट वृक्ष की पूजा के उपरांत व्रती महिलाओं ने मन में पति की दीघार्यु की कामना लिए वट वृक्ष की परिक्रमा की। सुबह से विभिन्न मंदिरों के निकट स्थित वटवृक्ष के नीचे महिला व्रतियों का भीड़ इकट्ठा होने लगी। हाथों में पूजा की थाल लिए जिसमें पूजा की अन्य सामग्रियों के अलावा बांस की लकड़ी से बना पंखा एवं मौसमी फल लेकर पूजा करने महिला व्रती पहुंची। जमालपुर-धरहरा मुख्य मार्ग में स्थित शिव साईं धाम मंदिर, चैती दुर्गा स्थान, फरीदपुर, दौलतपुर, गायत्री नगर, सफियाबाद, नयागांव, आशिकपुर में मंदिर के निकट स्थित वट वृक्ष के नीचे वट सावित्री व्रत की पूजा करने वाली महिलाओं की काफी भीड़ देखी। वटवृक्ष पर रोली का धागा लपेट कर प-रक्रमा करते हुए मन्नत मांगी। धर्मिक मान्यता है कि महासती सावित्री ने वटवृक्ष के नीचे ही मृत्यु के देवता यमराज से अपने मृत पति के लिए पुनःजीवन हासिल किया था। तभी से वटवृक्ष पूज्य हो गया।

यदुवंशी महासभा की ओर से वट सा-वित्री पर्व की दी शुभकामनाएं

यदुवंशी महासभा की ओर से देशभर की महिलाओं को वट सावित्री पर्व की शुभकामनाएं दी। महासभा की राष्ट्रीय महासचिव शबनम यादव एवं राष्ट्रीय उपाध्यक्ष मानसी कुमारी ने वट सावित्री व्रत पति-पत्नी के बीच प्रेम और समर्पण की शक्ति का जश्न मनाता है। सावित्री और सत्यवान पत्नी के समर्पण की शक्ति का उदाहरण हैं, जो मृत्यु को भी मात दे सकती है। यह त्यौहार वैवाहिक बंधन को मजबूत करता है और परि-वारों में शांति और समृद्धि लाता है। वहीं राष्ट्रीय उपाध्यक्ष संगीता यादव एवं बिंदा यादव ने सभी महिलाओं को बधाई शुभकामनाएं दी है।

आदर्श एवं पतिव्रता नारियों के लिए एक प्रतीक है वट सावित्री व्रत

शिव साईं धाम मंदिर के पुजारी संतोष झा ने बताया कि भारतीय संस्कृति में वट सावित्री व्रत आदर्श एवं पतिव्रता नारियों के लिए एक प्रतीक है। पौराणिक ग्रंथों में स्कंद पुराण तथा भविष्योत्तर पुराण में कहा गया है कि ज्येष्ठ मास के शुक्ल पक्ष की पूर्णिमा को यह व्रत करने से विवाहित महिलाओं को उनके वैवाहिक जीवन से जुड़े कई लाभ प्राप्त होते हैं। जबकि निर्णयामृत में कहा गया है कि ज्येष्ठ मास की अमावस्या को व्रत किया जाना चाहिए। वट सावित्री व्रत सौभाग्य को देने वाला और संतान की प्राप्ति में सहायता देने वाला व्रत माना गया है।

काफी मशक्कत के बाद आग पर काबू पा लिया गया

साहिबगंज :शहर के नॉर्थ कॉलोनी रेलवे इंस्टीट्यू के समीप बीते आधी रात को अचानक सफेद रंग की स्कार्पियो में आग लगने से चारों तरफ अफरा तफरी मच गई। वहीं स्कार्पियो में आग लगने की सूचना अग्निशमन विभाग को दी गई, दमकल वाहन के आने में विलंब होते देख आसपास के लोगों ने रेलवे क्वाटर में रहने वाले लोगों से पानी की सहायता मांगी, और कुछ लोगों ने हिम्मत जुटाते हुए बाल्टी बाल्टी से पानी भर भर कर आग बुझाने में जुट गए। काफी मशक्कत के बाद आग पर काबू पा लिया गया। जब वाहन में लगी आग पर काबू पा लिया गया तो उसके बाद दमकल वाहन घटना स्थल पर पहुंची, जिससे मौके पर मौजूद लोगों ने नाराजगी जाहिर की। वहीं मौके पर मौजूद स्कार्पियो वाहन के चालक प्रिंस कुमार ने बताया कि यह स्कार्पियो मिजाचौकी थाना को भाड़ा पर दिया गया है। यह वाहन गैस गोदाम सकरूगढ़ के निवासी शिवकुमार पासवान का है। चालक प्रिंस कुमार ने बताया कि सकरूगढ़ से मिजाचौकी जाने के क्रम में रेलवे इंस्टीट्यूट के समीप अचानक गाड़ी के अंदर शॉर्ट सर्किट होने से गाड़ी के भीतर चिंगारी निकलने लगी, तुरंत गाड़ी को रोके, और बाहर निकले। देखते ही देखते गाड़ी के इंजन में आग लग गई, और आग ने विकराल रूप ले लिया। और गाड़ी के दोनों टायरों से जोड़दार धमाका हुआ। बताया कि गाड़ी में आग लगने की सूचना नगर थाना और अग्निशमन विभाग को दिए। नगर पुलिस आने के बाद भी दमकल वाहन समय से नहीं पहुंची। फिर कुछ देर बाद आसपास के लोगों की मदद से आग कर काबू पा लिया गया। लेकिन इस आगजनी से गाड़ी का काफी हिस्सा जलने से भारी नुकसान होने का अंदेशा जताया।

सीसीएल के मगध-संघमित्रा क्षेत्र में द्विपक्षीय सुरक्षा समिति की बैठक आयोजित

दिव्य दिनकर:जिला ब्यूरो, कुन्दन पासवान

टंडवा:चतरा। सीसीएल के मगध-संघमित्रा क्षेत्र में क्षेत्रीय स्तरीय द्विपक्षीय सुरक्षा समिति-2025 की बैठक आयोजित की गई, जिसकी अध्यक्षता क्षेत्रीय महाप्रबंधक नृपेन्द्र नाथ ने की। यह बैठक मगध-संघमित्रा क्षेत्र के प्रबंधन एवं श्रमिक संगठन प्रतिनिधियों के बीच हुई, जिसमें खदानों की सुरक्षा और अन्य संबंधित मुद्दों पर चर्चा की गई। क्षेत्र में परिचालन इकाइयों में सुरक्षा व्यवस्था को मजबूत करने और व्यावसायिक सुरक्षा के 'शून्य हानि' स्तर को प्राप्त करने के लिए विभिन्न उपायों पर भी चर्चा की गई। बैठक के दौरान मगध-संघमित्रा क्षेत्र की सुरक्षा स्थिति की समीक्षा की गई और सुरक्षा मानक में सुधार के लिए महत्वपूर्ण जानकारी ली गई

बैठक के दौरान श्रमिक संगठन प्रतिनिधियों ने अपने विचार व्यक्त किए तथा खदानों में सुरक्षा मानकों को बढ़ाने के लिए सुझाव दिए। क्षेत्रीय महाप्रबंधक नृपेन्द्र नाथ ने आश्वस्त किया कि खदानों में सुरक्षा मानकों को बेहतर बनाने के लिए सुरक्षा समिति के सदस्यों के सुझावों को लागू किया जाएगा। बैठक का समापन शंभू नाथ, वरिष्ठ प्रबंधक (खनन) मगध-संघमित्रा क्षेत्र के धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ। बैठक की सफलता में क्षेत्रीय सुरक्षा अधिकारी एस.एन. प्रसाद तथा उनकी टीम ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। बैठक में जेएमएस, आरकेएमयू, बीएमएस, एटक, सीआईटीयू, सीएमयू तथा आरसीएमयू के श्रमिक संगठन प्रतिनिधि, ठेकेदार मजदूर प्रतिनिधि और मगध-संघमित्रा क्षेत्र के प्रबंधन उपस्थित हुए।

पश्चिम मंडल कार्यसमिति का बैठक मंटू बाबा के आवास पर किया

भाजपा नेता राकेश सिंह ने कार्यकर्त्ताओ को अपना बूथ सबसे मजबूत करने की बात कही

सोनपुर , दरियापुर पश्चिम मंडल कार्यसमिति का बैठक सखनौली मे सरपंच सह मंडल अध्यक्ष मंटू बाबा के आवास पर किया गया जिसकी अध्यक्षता मंटू बाबा ने किया और संचालन भाजपा नेता पवन सिंह ने किया इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप मे भाजपा नेता प्रदेश कार्य समिति सदस्य राकेश सिंह ने कार्यकर्त्ताओ को सम्बोधित करते हुए अपना बूथ सबसे मजबूत करने की बात कही और पटना मे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी के कार्यक्रम मे लोगो से बड़ी संख्या मे परसा विधानसभा से चलने की अपील की इस अवसर पर जिलाउपाध्यक्ष विकास गुप्ता भाजपा नेता हरेंद्र सिंह पूर्व मुखिया हरी सहनी कृष्णकांत सिंह उप सरपंच जयमाला देवी लगनी देवी मंटू गुप्ता मुनचुन लालबाबू शर्मा सुमंत कुमार मोनू सिंह रंजीत सिंह मनीष गुप्ता कुणाल सिंह उमेश महतो पंचायत समिति मुकेश कुमार सोनू सिंह अजय साह गोपाल जी राकेश दुबे राजेश सिंह बच्चा पांडेय सहित सैकड़ो कार्यकर्त्ता उपस्थित थे।

वट सावित्री व्रत रखकर पति के लिए सुहागिनों ने मांगी लंबी उम्र की कामना

संवाददाता राम कुमार

बालूमाथ। प्रखंड मुख्यालय में सोमवार को वट सावित्री पूजा के अवसर पर सुहागिनों ने वट वृक्ष की पूजा अर्चना की इस दौरान बालूमाथ प्रखंड के प्रखंड परिसर,बड़का बालूमाथ,कन्या मध्य विद्यालय के अलावा कई जगहों पर बरगद पेड़ के समक्ष सभी सुहागिन महिलाओं ने वैदिक मंत्रोच्चारण के बीच पूजा अर्चना कर अपने-अपने पति के लंबी उम्र के लिए ईश्वर से प्रार्थना की। सुहागिन महिलाओं ने अपने पति की लंबी उम्र के लिए वट सावित्री व्रत रखकर अपने पति से आशीर्वाद लिया।पूजा के बाद सभी स-ुहागिन महिलाओं ने वट के पेड़ में धागा बांधकर अपने पति की लंबी उम्र का कामना की,पूजा के बाद पुरोहित दीनानाथ वैद के द्वारा सभी सुहागिन महिलाओं को बर पेड़ के नीचे सावित्री कथा प्रेरणा लेने की बात कही।पूजा करने के बाद अपने-अपने घर जाकर सभी महिलाएं अपने पति को प्रसाद खिलाकर व पैर छू कर आशीर्वाद ली। इसके अलावा टमटम टोला, मुरपा,जोगीयाडीह,नगड़ा गणेशपुर,तसतबार,शेरेगड़ा,के अलावा कई स्थानों पर सुहागिन महिलाओं ने वट सावित्री पूजा की।अंत में सुहागिन महिलाओं ने अपने पति के हाथ से उपवास तोड़ी।इस अवसर पर प्रखंड के कई मंदिरों में विशेष पूजा का आयोजन किया गया। इस दौरान उपवास महिलाएं,मीना देवी,रेखा देवी,सरिता देवी,चाँदनी देवी,गीता देवी,पूनम देवी के अलावा सैकड़ो महिलाए शामिल रही।

गोह प्रखंड मुख्यालय में बीस सूत्री कार्यक्रम की बैठक आयोजित, योजनाओं की प्रगति पर हुई समीक्षा

रिपोर्ट - अमरेन्द्र कुमार सिंह

गोह (औरंगाबाद) गोह प्रखंड मुख्यालय के सभागार में सोमवार को बीस सूत्री कार्यक्रम की एक महत्वपूर्ण बैठक का आयोजन किया गया। बैठक की अध्यक्षता प्रखंड विकास पदाधिकारी राजेश कुमार दिनकर ने की। सर्व प्रथम बीस सूत्री अध्यक्ष उमेश पासवान को बिडिओ राजेश कुमार दिनकर ने और सीओ अजय कुमार सिंह ने उपाध्यक्ष ओम प्रकाश कुमार ऊर्फ कुंजन सिंह को बुके देकर स्वागत किया।

इस अवसर पर प्रखंड क्षेत्र में चल रही विभिन्न सरकारी योजनाओं की प्रगति की समीक्षा की गई और संबंधित विभागों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए गए। बैठक में शिक्षा, स्वास्थ्य, पेयजल, सड़क निर्माण, कृषि, मनरेगा, पीएम आवास योजना, स्वच्छ भारत मिशन और महिला सशक्तिकरण जैसी जनकल्याणकारी योजनाओं की प्रगति पर विस्तृत चर्चा हुई। बीडीओ राजेश कुमार दिनकर ने कहा कि सरकार की मंशा है कि सभी योजनाओं का लाभ समय पर और पार-दर्शी तरीके से अंतिम व्यक्ति तक पहुंचे। उन्होंने संबंधित पदाधिकारियों को निर्देश दिया कि योजनाओं के क्रियान्वयन में किसी प्रकार की लापरवाही नहीं होनी चाहिए। इस बैठक में जदयू प्रखंड अध्यक्ष कुंजन सिंह, उमेश पास-वान, सुनील शर्मा, राजीव बिद्यार्थी, कुमार आर्य, बबलू शर्मा ऊर्फ राघवेंद्र धारी, दीनानाथ चन्द्रवंशी, अवध पटेल, अजय कुमार, रामशंकर द्विवेदी सहित कई अन्य स्थानीय जनप्रतिनिधि, समाजसेवी और बीस सूत्री से जुड़े सदस्य उपस्थित रहे। सभी वक्ताओं ने अपने-अपने सुझाव और समस्याएं बैठक में रखीं, जिनका बीडीओ ने गंभीरता से संज्ञान लिया और शीघ्र समाधान का आश्वासन दिया। बैठक सौहार्दपूर्ण वातावरण में संपन्न हुई, और अंत में सभी ने क्षेत्र के सर्वांगीण विकास के लिए मिलकर कार्य करने का संकल्प लिया।

जिला स्तरीय पदाधिकारीक का आभार यह सम्मान समारोह का आयोजन किया गया

साहिबगंज:-बोरियो प्रखंड क्षेत्र के उत्क्रमित मध्य विद्यालय बड़ा पंचगढ़ मे बीआरपी व सीआरपी महासंघ साहिबगंज के द्वारा जिला स्तरीय पदाधिकारीक का आभार यह सम्मान समारोह का आयोजन किया गया.जिसमें क्षेत्रिय शिक्षा संयुक्त निदेशक सह जिला शिक्षा-पदाधिकारी,जिला शिक्षा अधीक्षक,अनुमंडल शिक्षा पदाधिकारी, अतिरिक्त शिक्षा कार्यक्रम पहाधिकारी एवं सभी सहायक कार्यक्रम पदाधिकारी को बीआरपी व सीआरपी के बहु प्रतिक्षित मांग के पूर्ण होने में उनके योगदान के लिए सम्मान किया गया.इस सम्मान कार्यक्रम मे जिले के सभी बीआरपी व सीआरपी उपाधित हुए। जिला अध्यक्ष अशोक पाल एवं जिला महासचिव फैजल अफरोज ने क्षेत्रीय शिक्षा संयुक्त निदेशक सह जिला शिक्षा पदाधिका-री व जिला शिक्षा अधीक्षक को शॉल देकर सम्मानित किया गया एवं साथ में सभी जिलास्तरीय पदाधिकारीयों को सम्मानित किया गया।बैठक में मुख्य रूप से मो उत्सव आलम,अनुज कुमार, धमेन्द्र कुमार,राजेश कुमार,संजय कुमार सिंह,चन्दन कुमार सिंह,मो रियाजुद्दीन, बुद्धदेव प्रसाद,माखन यादव,दुर्गेश,मो कौसर आलम,राभाषण गुप्ता,सुल्तान अहमद,मजरुल इस्लाम,अशोक कुमार सहिये कई सीआरपी व वीआरपी मौजूद थे।

संक्षिप्त समाचार

मांडर चान्हो में सुहागिनों ने की वट सावित्री की पूजा

दिव्य दिनकर संवाददाता

मांडर - मांडर में सोमवार को सुहागिनों ने वट सावित्री की पूजा कर अपने पति के अखंड सौभाग्य की कामना की. इसके बाद सावित्री-सत्यवान की कथा सुनी. वट सावित्री की पूजा को लेकर क्षेत्र में स्थित वट वृक्ष के समीप सुबह से ही सुहागिनों की भीड़ लगी रही. थी. इधर चान्हो प्रखंड में भी सुहागिनों ने वट सावित्री का व्रत रखा और वट वृक्ष की पूजा कर पति के दीर्घायु होने की कामना की!

सुहागिनों ने की पूजा-अर्चना,पति के दीर्घायु की कामना

महिलाएं वट सावित्री व्रत श्रद्धा और भक्ति के साथ

मनाई गई

दिव्य दिनकर:जिला ब्यूरो,कुन्दन पासवान

चतरा। जिले अंतर्गत वट वृक्ष की पूजा कर महिलाओं ने अपने पति की लंबी आयु, उत्तम स्वास्थ्य और सुखी दांपत्य जीवन की कामना की,हिन्दू धर्म में आस्था और नारी शक्ति का प्रतीक वट सावित्री व्रत इस साल 26 मई 2025, सोमवार को श्रद्धा और भक्ति के साथ मनाई गई। विशेष रूप से विवाहित महिलाओं द्वारा अपने पति की लंबी आयु, उत्तम स्वास्थ्य और सुखी दांपत्य जीवन की कामना के लिए मनाया।

वट सावित्री व्रत ज्येष्ठ मास की अमावस्या को मनाया जाता है। इस दिन महिलाएं वट (बरगद) वृक्ष की पूजा कर व्रत रखती हैं। धार्मिक मान्यताओं के अनुसार वट वृक्ष में त्रिदेव-ब्रह्मा, विष्णु और महेश-का वास होता है, जिससे इसकी पूजा का महत्व और भी अधिक हो जाता है।

सावित्री ने यमराज से सत्यवान के प्राण वापल पाए थे

इस व्रत से जुड़ी कथा सावित्री और सत्यवान की है, जिसमें सावित्री ने अपने दृढ़ संकल्प, प्रेम और निष्ठा से यमराज से अपने पति के प्राण वापस पाये थे। यह कथा भारतीय संस्कृति में नारी धर्म, साहस और अटूट विश्वास का प्रेरणास्रोत मानी जाती है। व्रत के दिन महिलाएं पारंपरिक वस्त्रों और श्रृंगार में वट वृक्ष की परिक्रमा करती हैं,अरवा धागा बांधती हैं और कथा सुनती हैं।

सबसे खास बात यह है कि, इस बार वट सावित्री व्रत सोमवार को मनाई गई, जिससे यह सोमवती अमावस्या भी बन रही है। यह संयोग अत्यंत दुर्लभ और सौभाग्यशाली माना जाता है। साथ ही, चंद्रमा इस दिन अपनी उच्च राशि वृषभ में संचार करें,जो शुभ संकेत है। यह पर्व महिलाओं को न केवल आध्यात्मिक बल देता है, बल्कि पारिवारिक संस्कार को भी मजबूती देता है। यह पर्व भारतीय समाज में संस्कार, परंपरा और श्रद्धा का जीवंत उदाहरण है, जो हर साल नई पीढ़ियों को अपनी जड़ों से जोड़ता है।

समाज कल्याण विभाग अन्तर्गत स्वीकृत आंगनबाड़ी केन्द्र भवन निर्माण कार्य की हुई समीक्षा

दिव्य दिनकर:जिला ब्यूरो, कुन्दन पासवान

चतरा। विकास भवन स्थित उप विकास आयुक्त कार्यालय कक्ष में उप विकास आयुक्त अमरेंद्र कुमार सिन्हा की अध्यक्षता में समाज कल्याण अन्तर्गत स्वीकृत आंगनबाड़ी केन्द्र भवन निर्माण, बिजली कनेक्शन एवं 0 से 05 वर्ष के बच्चों का आधार कार्ड बनाने की समीक्षा बैठक की गयी। कार्यपालक अभियंता एनआरईपी चतरा के द्वारा प्रशासनिक स्वीकृती प्रदान किये जाने के काफी विलम्ब से निविदा करने पर उन्होंने नाराजगी व्यक्त किया एवं तीन माह के अन्दर सभी स्वीकृत 38 आंगनबाड़ी केन्द्रों का भवन निर्माण पूर्ण करने और जिला अभियंता जिला परिषद चतरा को स्वीकृत 14 आं० केन्द्रों का भवन निर्माण दो महिने के अन्दर पूर्ण करने का निदेश दिया गया।

कार्यपालक अभियंता, पेयजल एवं स्वच्छता प्रमण्डल, चतरा को चिन्हित 592 आंगनबाड़ी केन्द्रों में पेयजल की व्यवस्था एवं चिन्हित 234 आंगनबाड़ी केन्द्रों में शौचालय का निर्माण 01 माह के अन्दर पूर्ण करने और उक्त चिन्हित सभी एजेंसी को प्रत्येक सप्ताह का भौतिक प्रतिवेदन उपलब्ध कराने का निदेश दिया गया।कार्यपालक अभियंता विद्युत प्रमण्डल चतरा को विभिन्न बाल विकास परियोजना पदाधिकारी से आवेदन प्राप्त करते हुए शतप्रतिशत आंगनबाड़ी केन्द्रों में विद्युतीकरण का कार्य पूर्ण करने एवं परियोजना पदाधिकारी, यूआईडी, चतरा को सभी महिला पर्यवेक्षिकाओं को आधार का कार्य हेतु प्रशिक्षित करने का निदेश दिया गया। बैठक में जिला अभियंता, जिला परिषद, चतरा, कार्यपालक अभियंता एनआरईपी , कार्यपालक अभियंता, पेयजल एवं स्वच्छता प्रमण्डल, चतरा, कार्यपालक अभियंता, विद्युत प्रमण्डल, चतरा जिला समाज कल्याण पदाधिकारी, चतरा एवं परियोजना पदाधिकारी, यूआईडी चतरा समेत अन्य संबंधित उपस्थित थे।

प्रधानमंत्री के बिहार दौरे को लेकर पुलिस अलर्ट, डीजीपी ने अधिकारियों के साथ की बैठक

पटना,

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ऑपरेशन सिंदूर की सफलता के बाद पहली बार आगामी 29 मई को बिहार के दो दिवसीय दौरे पर आ रहे हैं। प्रधानमंत्री 29 मई को पटना पहुंचेंगे और 30 मई को रोहतास जिले में एक बड़ी जनसभा को संबोधित करेंगे। प्रधानमंत्री के इस दौरे को लेकर बिहार पुलिस पूरी तरह से अलर्ट हो गई है। पुलिस महानिदेशक (डीजीपी) विनय कुमार ने पटना में पुलिस अधिकारियों की बड़ी बैठक बुलाई है।

बिहार पुलिस मुख्यालय में डीजीपी की अध्यक्षता में चल रही अहम बैठक में पुलिस के तमाम आला अधिकारी मौजूद हैं। बैठक में प्रधानमंत्री के बिहार दौरे के दौरान सुरक्षा व्यवस्था की समीक्षा कर रहे हैं। डीजीपी विनय कुमार ने एटीएस प्रमुख एडीजी पंकज दराद के साथ प्रधानमंत्री की सुरक्षा से जुड़े हर पहलू पर चर्चा की है।

प्रधानमंत्री का पटना और रोहतास के बिक्रमगंज में कार्यक्रम तय है। प्रधानमंत्री के दौरे को लेकर पुलिस मुख्यालय ने हाई अलर्ट जारी किया है। पटना और रोहतास के एसपी के साथ पुलिस मुख्यालय के सभी प्रभाग के एडीजी और पटना रेंज के आईजी को अलर्ट भेजा गया है। आतंकी संगठनों और नक्सली संगठनों से प्रधानमंत्री की जान का खतरा बताया गया है और सुरक्षा के सभी मानकों का पूरा ख्याल रखने को कहा गया है।

उल्लेखनीय है कि प्रधानमंत्री 29 मई को पटना पहुंचेंगे, जहां वे जयप्रकाश नारायण अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे के नए टर्मिनल भवन का उद्घाटन करेंगे। इसके बाद वे बिहटा एयरपोर्ट की आधारशिला रखेंगे। पटना में उनका भव्य रोड शो भी होगा। रोड शो के दौरान जगह-जगह महिलाएं प्रधानमंत्री की आरती करेंगी और उन पर फूल बरसाए जाएंगे। रोड के दोनों ओर कार्यकर्ता उनका स्वागत करेंगे।

प्रधानमंत्री भाजपा प्रदेश कार्यालय में बिहार के भाजपा सांसदों, विधायकों, विधान पार्षदों और पार्टी पदाधिकारियों से मुलाकात करेंगे। इस बैठक का उद्देश्य आगामी बिहार विधानसभा चुनाव-2025 की तैयारी और जमीनी कार्य की समीक्षा करना है।

प्रधानमंत्री अपने दौरे के दूसरे दिन यानि 30 मई को बिक्रमगंज में एक विशाल जनसभा को संबोधित करेंगे, वहां से वे जनता को करोड़ों रुपये की योजनाओं की सौगात भी देंगे। प्रधानमंत्री के कार्यक्रम में औरंगाबाद के नबीनगर में सुपर थर्मल पॉवर प्लॉन्ट का शिलान्यास करना भी शामिल है।

रामपुर गांव में मवेशी चोरी, आरोपी गिरफ्तार

दिव्य दिनकर संवाददाता तारापुर।

तारापुर थाना क्षेत्र के रामपुर गांव में मवेशी चोरी की एक घटना का खुलासा हुआ है। पुलिस ने त्वरित कार्रवाई करते हुए चोरी गई गाय को बरामद कर लिया है और आरोपी को गिरफ्तार कर न्यायिक हिरासत में भेज दिया गया है।प्राप्त जानकारी के अनुसार, रामपुर गांव निवासी नौशाद की एक गाय 24 मई की मध्य रात्रि में उसके गौशाला से चोरी हो गई थी। गाय की तलाश करते हुए नौशाद को पता चला कि उसकी गाय गांव के ही औरन के गुहाल में बंधी हुई है। जब उसने औरन से अपनी गाय लौटाने की मांग की, तो औरन ने न केवल गाली-गलौज की बल्कि मारपीट की धमकी भी दी और गाय लौटाने से साफ इनकार कर दिया।

घटना की जानकारी मिलते ही आसपास के ग्रामीण मौके पर पहुंचे और औरन को समझाने का प्रयास किया, परंतु उसने अड़ियल रुख अपनाते हुए कहा, ₹जो करना है कर लो, हम गाय नहीं लौटाएंगे।₹

इसके बाद पीड़ित ने तत्काल तारापुर थाना को सूचित किया। सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची और औरन के गुहाल से गाय को बरामद कर लिया। बरामदगी के बाद पुलिस ने आरोपी औरन को गिरफ्तार कर लिया और आवश्यक कानूनी प्रक्रिया पूरी करते हुए उसे जेल भेज दिया।गाय को जिम्मेनामा पर उसके मालिक नौशाद को सौंप दिया गया है।

सुहाग की सलामती के लिए सुहागिनों ने किया वट सावित्री व्रत

दिव्य दिनकर संवाददाता तारापुर।

सुहाग की लंबी आयु की कामना को लेकर सुहागिनों ने वट सावित्री पूजन किया। ज्येष्ठ मास की अमावस्या तिथि को प्रतिवर्ष ऐसा अवसर आता है। सुहागिनों ने व्रत रखें तथा वट वृक्ष की पूजा की। मान्यता है कि वट वृक्ष में ब्रह्मा विष्णु और महेश का वास होता है। विद्वत जनों ने बताया कि पूजन का शुभ मुहूर्त सोमवार को अमावस्या 12.11 बजे से मंगलवार सुबह 8.31 बजे तक होगा। अभिजीत मुहूर्त में पूजा करना शुभ माना जाता है। सुबह 11:51 बजे से दिन के 3:00 तक का मुहूर्त सबसे शुभ माना गया था और इसी बीच में ग्रामीण क्षेत्रों में वट वृक्ष के नीचे महिलाओं की लंबी कतार पूजन के लिए उपस्थित हुई थी। बहुत सारे घरों में ही गमला में वट वृक्ष का पौधा लगाकर महिलाओं ने पूजन किया। मान्यता है कि सावित्री ने यमराज से अपने पति सत्यवान के प्राण वापस लिए थे । व्रत से पति की दीर्घायु और वैवाहिक जीवन में सुख समृद्धि आती है, इसके लिए विधि विधान से पूजा किया जाता है। सुहागिन महिलाएं वटवृक्ष की पूजा करती है । वटवृक्ष के नीचे ही सावित्री ने अपने पति सत्यवान के प्राण यमराज से वापस लिए थे। पूजन के क्रम में महिलाएं वट वृक्ष के पेड़ को जल चढ़ाती हैं, उसमें हल्दी रोली लगाकर फूल समर्पित करती हैं, कच्चे सूत का धागा वट वृक्ष के चारों ओर सात या 11 बार परिक्रमा करते हुए लपेटकर हर फेरे पर मन में पति की लंबी उम्र की कामना करती है। दीपक जलाया जाता है और बैठ करके बट सावित्री व्रत की कथा पढ़ती हैं और सुनती हैं। अंत में मां सावित्री की आरती करती हैं । व्रत का पारन अगले दिन सूर्योदय के बाद जलपान कर करती है। यह पूजन सनातनियों में सभी घरों की सुहागिन करती हैं।

बिहार सरकार कोरोना वायरस के नये वेरिएंट से निपटने के लिए तैयार

-राज्य में कोरोना वायरस की समीक्षा के लिए हुई उच्चस्तरीय बैठक

पटना,

पटना के विकास भवन स्थित स्वास्थ्य विभाग के सभागार में कोरोना संक्रमण की वर्तमान स्थिति एवं उससे निपटने की तैयारियों की समीक्षा के उद्देश्य से सोमवार को स्वास्थ्य विभाग ने एक उच्चस्तरीय बैठक की। इस महत्वपूर्ण बैठक की अध्यक्षता विकास आयुक्त सह स्वास्थ्य विभाग के अपर मुख्य सचिव प्रत्यय अमृत ने की। बैठक में कोरोना वायरस की वर्तमान स्थिति, स्वास्थ्य सुविधाओं की उपलब्धता, जांच एवं उपचार की व्यवस्था तथा दवाओं एवं ऑक्सीजन सहित आवश्यक संसाधनों की आपूर्ति की समीक्षा की गई।

अपर मुख्य सचिव ने इस मौके पर आमजन से अपील करते हुए कहा कि कोरोना के नये वेरिएंट से घबराएं नहीं, बल्कि सतर्क और जागरूक रहें। भारतीय सार्स-कोव-2 जीनोमिक्स कंसोर्टियम (आईएनएसएसीओजी) के अनुसार भारत में कोरोना के दो नये सब-वेरिएंट झ्र एनबी.1.8.1 और एलएफ.7 की पहचान की गई है।विश्व स्वास्थ्य संगठन ने इन दोनों को मात्र ₹निगरानी में रखे गए वेरिएंट₹ की श्रेणी में रखा है।

उन्होंने बैठक के दौरान सभी सिविल सर्जनों एवं मेडिकल कॉलेजों के अधीक्षकों को संदिग्ध मामलों की पहचान, सक्रिय निगरानी और समय पर जांच सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। सभी जिलों को किसी भी संभावित परिस्थिति के लिए तैयार रहने के भी निर्देश दिए गए हैं।

स्वास्थ्य विभाग सभी जिलों को पर्याप्त मात्रा में जांच किट, मास्क, दवाएं, ऑक्सीजन और आवश्यक उपकरणों की आपूर्ति सुनिश्चित कर रही है। अपर मुख्य सचिव ने स्वास्थ्य सेवाओं में पारदर्शिता, प्रभावी समन्वय एवं जवाबदेही को सुनिश्चित करने पर विशेष बल दिया। साथ ही जन जागरूकता बढ़ाने और नियमित निगरानी की प्रक्रिया को मजबूत करने के भी निर्देश दिए गए।

बैठक में स्वास्थ्य विभाग के सचिव मनोज कुमार सिंह, बिहार मेडिकल सर्विसेज एंड इंफ्रास्ट्रक्चर कॉर्पोरेशन (बीएमएसआईसीएल) के प्रबंध निदेशक धर्मेंद्र कुमार, स्वास्थ्य विभाग की संयुक्त सचिव डॉ. अनुपमा सिंह के साथ-साथ अन्य पदाधिकारी भी मौजूद रहे।

इस बैठक में राज्य के सभी जिलों के सिविल सर्जन, सरकारी मेडिकल कॉलेजों के प्राचार्य एवं अधीक्षक के साथ ऑल इंडिया इंस्टिट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेस (एम्स), पटना, इंदिरा गांधी इंस्टिट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेस (आईजीआईएमएस), राजेंद्र मेमोरियल रिसर्च इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज (आरएमआरआई), ईएसआईसी मेडिकल कॉलेज एण्ड हॉस्पिटल, बिहटा के प्रतिनिधियों ने वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से भाग लिया।

चौपारण के भदान में नकली विदेशी शराब की अवैध मिनी फैक्ट्री का भंडाफोड़, बड़ी मात्रा में स्पिरिट, शराब और सामग्री जब्त

उत्पाद विभाग की बड़ी कार्रवाई, तस्करों में मचा हड़कंप

दिव्य दिनकर

चौपारण, राजेश सहाय

चौपारण:प्रखंड अंतर्गत दैहर पंचायत के ग्राम भदान में उत्पाद विभाग ने सोमवार को एक बड़ी कार्रवाई करते हुए अवैध नकली विदेशी शराब की मिनी फैक्ट्री का भंडाफोड़ किया। इस छापेमारी से पूरे क्षेत्र में सनसनी फैल गई है, वहीं अवैध शराब कारोबार से जुड़े तस्करों में हड़कंप मच गया है।

गुप्त सूचना के आधार पर की गई इस छापेमारी में उत्पाद विभाग ने ग्राम भदान स्थित एक मुर्गी फार्म एवं उससे थोड़ी दूरी पर एक घर से भारी मात्रा में अवैध शराब और शराब निर्माण की सामग्री जब्त की। विभाग के अवर निरीक्षक सुमितेश कुमार ने जानकारी दी कि मौके से लगभग 30 पेटियों में 270 लीटर नकली विदेशी शराब, 210 लीटर कच्चा स्पिरिट, तैयार रंगीन शराब, कैरामेल और अन्य केमिकल जब्त किए गए हैं। इसके अलावा विभिन्न ब्रांड के सैकड़ों ढक्कन, लेबल, स्टिकर और खाली बोतलें भी बड़ी मात्रा में बरामद हुई हैं।इस गोरखधंधे का संचालन ग्राम भदान निवासी उमेश सिंह द्वारा किया जा रहा था, जो मुख्य अभियुक्त है। उत्पाद विभाग ने उसके खिलाफ प्रासंगिक धाराओं के तहत सुसंगत कार्रवाई की प्रक्रिया शुरू कर दी है। प्रारंभिक जांच में यह बात सामने आ रही है कि यह गिरोह नकली विदेशी ब्रांड्स की पैकिंग कर उसे बाजार में खपाने का काम कर रहा था, जिससे न सिर्फ राजस्व को नुकसान हो रहा था, बल्कि लोगों की जान भी खतरे में डाली जा रही थी।छापेमारी दल में अवर निरीक्षक सुमितेश कुमार के साथ सैयद बसरुद्दीन, साधू चरण हेम्ब्रम, अनूप कुमार सिंह, एंटोनी बाग्गे सहित सशस्त्र गृह रक्षक बल के जवान भी शामिल थे।

पूरी टीम ने योजनाबद्ध तरीके से कार्यवाही को अंजाम दिया और घटनास्थल से सभी आपत्तिजनक वस्तुएं जब्त कर ली गईं।यह कार्रवाई न केवल अवैध शराब कारोबार पर करारा प्रहार है, बल्कि इससे यह स्पष्ट होता है कि उत्पाद विभाग इस तरह की गैरकानूनी गतिविधियों के प्रति सतर्क है।मुख्य अभियुक्त उमेश सिंह और उसके नेटवर्क की खोज में टीम लगी हुई है। सूत्रों के अनुसार, इस अवैध कारोबार का जाल आसपास के क्षेत्रों में भी फैला हो सकता है। उत्पाद विभाग ने संकेत दिया है कि इस नेटवर्क की जड़ तक पहुंचने के लिए और भी छापेमारियां की जाएंगी।इस घटना ने यह दिखा दिया है कि अवैध शराब माफिया किस हद तक जाकर कानून को धता बताते हैं।

करों में श्रद्धा और भक्ति के साथ मनाया गया वट सावित्री व्रत

करों, देवघर संवाददाता

आज सोमवार को करों प्रखंड के विभिन्न गाँवों की सौभाग्यवती महिलाओं ने अपने पति की लंबी उम्र, अखंड सौभाग्य और पारिवारिक सुख-समृद्धि की कामना करते हुए श्रद्धा और विधि-विधान से वट सावित्री व्रत का पालन किया। करों स्थित धार्मिक और पौराणिक स्थलों राय टोला, रजवार टोला, कुम्हार टोला और बढ़ई टोला में पुरोहित मंटु ओझा और बापी ओझा के मार्गदर्शन में पूजा-अर्चना संपन्न हुई। इस अवसर पर केन्दवेरिया, रानीडीह, डिण्डाकोली, सिरिया, कमलकर, चाँदचौरा, पंचगड़िया, सालतर और गोविन्दपुर समेत कई गाँवों की महिलाओं ने व्रत रखते हुए सोलह श्रृंगार किया और वटवृक्ष के समीप पूजन सामग्री जैसे फल-फूल, अक्षत, पान, आलता, सिंदूर, पंखा और लाल धागा अर्पित किए। परंप्रा के अनुसार महिलाओं ने वटवृक्ष की परिक्रमा करते हुए उसमें सूत लपेटा और पंखा ढुलाया। साथ ही सत्यवान-सावित्री की पौराणिक कथा का सामूहिक श्रवण पंडितों द्वारा किया गया। पूरे वातावरण में आस्था और भक्ति की भावनाएँ स्पष्ट रूप से दिखाई दीं।

मूंगफली तेल महंगा, सोयाबीन रिफाइंड, पाम तेल नरमी

इंदौर। सप्ताहांत खाद्य तेलों में भाव ऊपर नीचे हुए। प्रोडक्शन सेंटरों की तेजी के समर्थन से मूंगफली तेल महंगा बिका। सोयाबीन रिफाइंड तथा पाम तेल सस्ता बिका। तिलहनों में रिफाइनरी प्लांटों की लिवाली रही, इससे भाव ऊंचे रहे। मूंगफली तेल 1360 से 1380 रुपये प्रति 10 किलोग्राम खुला जो 1410 से 1430 रुपये पर रुका। हालांकि कारोबार के दौरान भाव ऊपर नीचे हुए। सोयाबीन रिफाइंड 1230 से 1235 रुपये पर खुलकर 1225 से 1230 रुपये बिका। पाम तेल 1275 से 1280 रुपये खुलकर 1265 से 1270 रुपये होकर थमा। तिलहन जिन्सों में मांग से मिश्रित रंगत दर्ज की गई। पशु आहार कपास्या खली में लिवाली से मजबूती रही।

चना कांटा, मसूर, तुअर में नरमी, दालों में घट-बढ़

इंदौर, 25 मई (वार्ता) संयोगितागंज अनाज मंडी में सप्ताहांत दलहन जिन्सों में नरमी दर्ज की गई। दालों के दामों में मिश्रित रंगत रही। चावल में खरीदी से तेजी रही। सोमवार को चना कांटा 6050 से 6100 रुपये खुलने के बाद 6000 से 6075 रुपये होकर थमा। मूंग 8000 से 8500 रुपये पर खुलने के बाद नीचे में 7200 रुपये बिकी। भाव 7600 से 7700 रुपये बोले गए। कारोबार में तुअर 6400 से 7500 रुपये खुलकर 6400 से 7200 रुपये बिकी। उड़द 7500 से 8000 पर खुलकर 7200 से 7800 रुपये रही। मसूर 6350 से 6400 पर खुलने के बाद 6190 से 6150 रुपये प्रति क्विंटल बिकी। दालों में भाव मांग सुस्ती से ऊपर नीचे हुए। सप्ताहांत चना दाल, तुअर दाल, मूंग दाल में भाव कम हुए। गेहूं आटा में लिवाली सुस्ती से मंदा रहा। वहीं दलिया भी सस्ती बिकी। इस बीच चना बेसन में भाव कम हुए। चावल में मजबूती रही।

बंपर लाभांश से राजकोषीय हालात बेहतर करने में मिलेगी मदद; 70000 करोड़ अतिरिक्त खर्च कर सकेगी सरकार

नई दिल्ली। भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) के 2.69 लाख करोड़ रुपये के बंपर लाभांश से सरकार की राजकोषीय स्थिति बेहतर हो सकेगी। साथ ही, दुनिया की चौथी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था में वृद्धि को आगे बढ़ाने में मदद मिलेगी। एसबीआई ने इकोरैप रिपोर्ट में कहा, हमारा अनुमान है कि बंपर लाभांश से राजकोषीय घाटा बजट स्तर से 0.2 फीसदी कम होकर जीडीपी का 4.2 फीसदी रहेगा। यह वैकल्पिक रूप से करीब 70,000 करोड़ के अतिरिक्त खर्च का रास्ता भी खोलेगा, जबकि अन्य चीजों में कोई बदलाव नहीं होगा। वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने 2025-26 के बजट में 2.56 लाख करोड़ का लाभांश मिलने का अनुमान लगाया था। रिपोर्ट में कहा गया है कि यह अधिशेष भुगतान मजबूत सकल डॉलर की बिक्री, उच्च विदेशी मुद्रा लाभ और ब्याज आय में लगातार वृद्धि की वजह से है। आरबीआई जनवरी में एशिया के अन्य केंद्रीय बैंकों की तुलना में विदेशी मुद्रा भंडार का शीर्ष विक्रेता था। सितंबर, 2024 में देश का विदेशी मुद्रा भंडार 704 अरब डॉलर के शिखर पर पहुंच गया था। आरबीआईसे बंपर लाभांश मिलने से सरकार बुनियादी ढांचे पर अपना खर्च बढ़ा सकती है।

भारत अब दुनिया की चौथी सबसे बड़ी आर्थिक शक्ति है, यह एक मामूली उपलब्धि नहीं है: आनंद महिन्द्रा

नई दिल्ली। भारत के लिए अर्थव्यवस्था के मोर्चे पर एक बड़ी और गौरवपूर्ण उपलब्धि सामने आई है। अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष की हालिया रिपोर्ट के अनुसार, भारत ने जापान को पीछे छोड़ते हुए दुनिया की चौथी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था का दर्जा हासिल कर लिया है। इस उपलब्धि पर उद्योगपति आनंद महिन्द्रा ने सोशल मीडिया पर एक भावुक और प्रेरक प्रतिक्रिया दी है, जिसे लोग खूब पसंद कर रहे हैं। आनंद महिन्द्रा ने एक्स पर दुनिया की टॉप 10 अर्थव्यवस्थाओं की सूची साझा करते हुए अपने बिजनेस स्कूल के दिनों को याद किया। उन्होंने लिखा, जब मैं बिजनेस स्कूल में था, तब भारत का जीडीपी में जापान से आगे निकलना महज़ एक कल्पना जैसा लगता था। आज यह मील का पत्थर हकीकत बन चुका है- भारत अब दुनिया की चौथी सबसे बड़ी आर्थिक शक्ति है। यह एक मामूली उपलब्धि नहीं है। उन्होंने यह भी जोड़ा कि इस उपलब्धि पर जश्न के साथ-साथ आगे की चुनौतियों पर भी ध्यान देना जरूरी है। खासकर प्रति व्यक्ति आय को बढ़ाना अगला बड़ा लक्ष्य होना चाहिए। इसके लिए उन्होंने इन्फ्रास्ट्रक्चर, शिक्षा और मैन्युफैक्चरिंग जैसे क्षेत्रों में सुधार की निरंतर आवश्यकता बताई। इस रिपोर्ट को लेकर नीति आयोग के बीवीआर सुब्रमण्यम ने भी कहा कि भारत की इकोनॉमी अब 4 ट्रिलियन डॉलर से अधिक हो चुकी है।

सर्राफा बाजार में सस्ता हुआ सोना, चांदी की बढ़ी चमक

एजेंसी

नई दिल्ली। घरेलू सर्राफा बाजार में आज सोने के भाव में कमजोरी का रुख नजर आ रहा है। सोना आज 400 रुपये से लेकर 440 रुपये प्रति 10 ग्राम तक सस्ता हो गया है। भाव में गिरावट आने के कारण आज देश के ज्यादातर सर्राफा बाजारों में 24 कैरेट सोना 97,640 रुपये से लेकर 97,790 रुपये प्रति 10 ग्राम के दायरे में कारोबार कर रहा है। इसी तरह 22 कैरेट सोना आज 89,500 रुपये से लेकर 89,650 रुपये प्रति 10 ग्राम के बीच बिक रहा है। चांदी के भाव में आज मामूली तेजी आने के कारण ये चमकीली धातु दिल्ली सर्राफा बाजार में आज एक लाख रुपये प्रति किलोग्राम के स्तर पर कारोबार कर रही है। दिल्ली में 24 कैरेट सोना आज 97,790 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर कारोबार कर रहा है, जबकि 22 कैरेट सोने की कीमत 89,650 रुपये प्रति 10 ग्राम दर्ज की गई है। वहीं देश की आर्थिक राजधानी मुंबई में 24 कैरेट सोना 97,640 रुपये प्रति 10 ग्राम और

22 कैरेट सोना 89,500 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर बिक रहा है। इसी तरह अहमदाबाद में 24 कैरेट सोने की रिटेल कीमत 97,690 रुपये प्रति 10 ग्राम और 22 कैरेट सोने की कीमत 89,550 रुपये प्रति 10 ग्राम दर्ज की गई है। इन प्रमुख शहरों के अलावा चेन्नई में 24 कैरेट सोना आज 97,640 रुपये प्रति 10 ग्राम की कीमत पर और 22 कैरेट सोना 89,500 रुपये प्रति 10 ग्राम की कीमत पर बिक रहा है। कोलकाता में भी 24 कैरेट सोना 97,640 रुपये प्रति 10 ग्राम और 22 कैरेट सोना 89,500 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर कारोबार कर रहा है। लखनऊ के सर्राफा बाजार में 24 कैरेट सोना आज 97,790 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर और 22 कैरेट सोना 89,650 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर बिक रहा है। पटना में 24 कैरेट सोने की कीमत 97,690 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर है, जबकि 22 कैरेट सोना 89,550 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर बिक रहा है।

जयपुर में 24 कैरेट सोना 97,790 रुपये प्रति 10 ग्राम और 22 कैरेट सोना 89,650 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर बिक रहा है। देश के अन्य राज्यों की तरह कर्नाटक, तेलंगाना और ओडिशा के सर्राफा बाजार में भी आज सोना सस्ता हुआ है। इन तीनों राज्यों की राजधानियों बेंगलुरु, हैदराबाद और भुवनेश्वर में 24 कैरेट सोना आज 97,640 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर कारोबार कर रहा है। इसी तरह इन तीनों शहरों के सर्राफा बाजारों में 22 कैरेट सोना 89,500 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर बिक रहा है।

विदेशी मुद्रा भंडार 4.9 अरब डॉलर गिरकर 685.7 अरब डॉलर पर

एजेंसी

मुंबई। स्वर्ण भंडार, विशेष आहरण अधिकार (एसडीआर) और अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (आईएमएफ) के पास आरक्षित निधि में भारी कमी होने से 16 मई को समाप्त सप्ताह में देश का विदेशी मुद्रा भंडार 4.9 अरब डॉलर लुढ़ककर 685.7 अरब डॉलर पर आ गया। वहीं, इसके पिछले सप्ताह देश का विदेशी मुद्रा भंडार 4.6 अरब डॉलर के इजाफे के साथ 690.6 अरब डॉलर पर रहा था। रिजर्व बैंक की ओर से जारी साप्ताहिक आंकड़े के अनुसार, 16 मई को समाप्त सप्ताह में विदेशी मुद्रा भंडार के सबसे बड़े घटक विदेशी मुद्रा परिसंपत्ति 27.9 करोड़ डॉलर की मजबूती के साथ 581.7 अरब डॉलर पर पहुंच गई। वहीं, इस अवधि में स्वर्ण भंडार 5.1 अरब डॉलर की भारी गिरावट आई और यह घटकर 81.2 अरब डॉलर पर आ गया। इसी तरह आलोच्य सप्ताह एसडीआर 4.3 करोड़ डॉलर कम होकर 18.5 अरब डॉलर रह गया। इस अवधि में आईएमएफ के पास आरक्षित निधि में 30 लाख डॉलर की कमी आई और यह पिछले सप्ताह के मुकाबले घटकर 4.4 अरब डॉलर पर आ गई।

एक हफ्ते में 2,950 रुपये तक महंगा हुआ सोना, चांदी भी पूरे सप्ताह में 2,900 रुपये उछला

एजेंसी

नई दिल्ली। घरेलू सर्राफा बाजार में आज सोने में तेजी का रुख नजर आ रहा है। सोना आज 510 रुपये से 560 रुपये प्रति 10 ग्राम तक महंगा हो गया है। भाव में तेजी आने के कारण आज देश के ज्यादातर सर्राफा बाजारों में 24 कैरेट सोना 98,080 रुपये से लेकर 98,230 रुपये प्रति 10 ग्राम के दायरे में कारोबार कर रहा है। इसी तरह 22 कैरेट सोना आज 89,900 रुपये से लेकर 90,050 रुपये प्रति 10 ग्राम के बीच बिक रहा है। चांदी के भाव में आज कोई बदलाव नहीं होने के कारण ये चमकीली धातु दिल्ली सर्राफा बाजार में आज भी 99,900 रुपये प्रति किलोग्राम के स्तर पर कारोबार कर रही है। साप्ताहिक आधार पर देखा जाए तो सोमवार से शनिवार तक के कारोबार के बाद देश के ज्यादातर सर्राफा बाजारों में 24 कैरेट सोने के भाव में 2,950 रुपये प्रति 10 ग्राम तक की मजबूती दर्ज की गई है। इसी तरह 22 कैरेट सोना भी पिछले एक सप्ताह के दौरान 2,700 रुपये प्रति 10 ग्राम तक महंगा हो चुका है। सोने की तरह

चांदी की कीमत में भी सोमवार से शनिवार तक के कारोबार के बाद 2,900 रुपये प्रति किलोग्राम तक की तेजी दर्ज की गई है। दिल्ली में 24 कैरेट सोना आज 98,230 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर कारोबार कर रहा है, जबकि 22 कैरेट सोने की कीमत 90,050 रुपये प्रति 10 ग्राम दर्ज की गई है। वहीं, देश की आर्थिक राजधानी मुंबई में 24 कैरेट सोना 98,080 रुपये प्रति 10 ग्राम और 22 कैरेट सोना 89,900 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर बिक रहा है। इसी तरह अहमदाबाद में 24 कैरेट सोने की रिटेल कीमत 98,130 रुपये प्रति 10 ग्राम और 22 कैरेट सोने की कीमत 89,950 रुपये प्रति 10 ग्राम दर्ज की गई है।

इंडोनेशिया के राष्ट्रपति और चीन के पीएम ने की टैरिफ पर चर्चा, मलयेशिया ने कहा- हम एकजुट हों

एजेंसी

बीजिंग। चीन के प्रधानमंत्री ली कियांग ने इंडोनेशिया के राष्ट्रपति प्रबोवो सुबियांतो से मुलाकात की और अमेरिका के वैश्विक व्यापार युद्ध तथा आर्थिक वैश्वीकरण के समक्ष चुनौतियों के दौरान व्यापार और निवेश बढ़ाने के तरीकों पर चर्चा की। ली दक्षिण-पूर्व एशिया की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था इंडोनेशिया की तीन दिवसीय यात्रा पर शनिवार दोपहर को इंडोनेशिया की राजधानी जकार्ता पहुंचे। यह इस साल उनकी पहली विदेश यात्रा का पहला पड़ाव था। इंडोनेशिया और चीन 20 प्रमुख विकासशील देशों और उभरती अर्थव्यवस्थाओं व ब्रिक्स के सदस्य देश हैं। ली रविवार शाम को इंडोनेशिया-चीन व्यापार स्वागत समारोह में अपने संबोधन के लिए 60 प्रमुख चीनी व्यवसायियों को अपने साथ लाए। उन्होंने अपने भाषण में इस बात पर जोर दिया कि बढ़ती बाहरी चुनौतियों के बावजूद चीन की अर्थव्यवस्था ने इस साल तेजी से विकास हासिल किया है। ली ने इस कार्यक्रम में कहा, वर्तमान अंतर्राष्ट्रीय स्थिति गतिरोध की स्थिति

में है, एकतरफावाद और संरक्षणवाद बढ़ रहा है, धमकाने वाला व्यवहार बढ़ रहा है। इस कार्यक्रम में सुबियांटो भी मौजूद थे।

ली ने कहा कि इस वर्ष गुटनिरपेक्ष आंदोलन की 70वीं वर्षगांठ है, जिसे एशियाई और अफ्रीकी देशों द्वारा इंडोनेशिया के बांडुंग शहर में आयोजित किया गया था, जब सात दशक से अधिक समय पहले विश्व एक ऐतिहासिक चौराहे पर था। ली ने कहा कि एकजुटता, मैत्री और सहयोग की बांडुंग भावना ने वैश्विक दक्षिण देशों की एकता और सहयोग में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।ली ने कहा, सात दशक से भी अधिक समय बाद, दुनिया एक बार फिर महत्वपूर्ण चौराहे पर है।उन्होंने सभी देशों से बातचीत और शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व के माध्यम से मतभेदों को सुलझाते हुए साझा आधार तलाशने का आह्वान किया। मलेशिया ने कहा- अमेरिकी टैरिफ से निपटने के लिए एकजुट रहना चाहिए मलेशिया के विदेश मंत्री मोहम्मद हसन ने कहा कि दक्षिण पूर्व एशियाई देशों को क्षेत्रीय आर्थिक एकीकरण में तेजी लानी चाहिए।

राइजिंग नॉर्थ ईस्ट शिखर सम्मेलन में 4.30 लाख करोड़ के निवेश प्रस्ताव आए : सिंधिया

एजेंसी

नई दिल्ली। पूर्वोत्तर भारत भी अब आर्थिक मजबूती की दिशा में देश के साथ मिलकर आगे बढ़ाने के लिए तैयार है। उत्तर पूर्व क्षेत्र विकास मंत्रालय के तत्वावधान में आयोजित राइजिंग नॉर्थ ईस्ट शिखर सम्मेलन में 4.30 लाख करोड़ रुपए के निवेश प्रस्ताव आए हैं।

दिल्ली में दो दिन तक चले राइजिंग नॉर्थ ईस्ट शिखर सम्मेलन के समापन के मौके पर केंद्रीय मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया ने कहा की उत्तर पूर्व वैश्विक साझेदारी और आपसी हित के केंद्र के रूप में उभर कर सामने आया है। उत्तर पूर्व क्षेत्र विकास मंत्रालय में मुख्य रूप से कृषि खेल निवेश प्रोत्साहन पर्यटन बुनियादी ढांचा वस्त्र और हस्तशिल्प आर्थिक गलियारा इकोनामिक कॉरिडोर और पशुपालन के क्षेत्र में आठ उच्च स्तरीय कार्य बल का गठन किया है जिससे उत्तर पूर्व के

प्रत्येक राज्य को अपने विकास का रोड मैप तैयार करने में सहायता मिलेगी। केंद्रीय मंत्री ने कहा कि उत्तर पूर्व क्षेत्र विकास मंत्रालय निवेशकों, विदेशी राजनयिकों, राजदूतों सहित विभिन्न हितधारकों के साथ चर्चा कर रहा है और उन्हें उत्तर पूर्व के राज्यों में निवेश के अवसरों का पता लगाने के लिए प्रोत्साहित कर रहा है। पिछले एक साल में मंत्रालय ने इस दिशा में व्यापक राष्ट्रव्यापी और अंतरराष्ट्रीय जुड़ाव के प्रयास का नेतृत्व किया है। इन प्रमुख पहलों में भारत के मुख्य शहरों में नौ घरेलू रोड शो, 95 से अधिक देशों के प्रतिनिधियों के साथ राजदूतों की बैठकें, छह राज्य स?तरीय गोलमेज सम्मेलन और सार्वजनिक उपक्रमों, उद्योग मंडलों और कॉर्पोरेट्स के साथ कई परामर्श बैठकें शामिल हैं। उन्होंने कहा कि इन चर्चाओं से वास्तविक परिणाम सामने आए हैं और 4.30 लाख करोड़ रुपये के निवेश प्रस्ताव प्राप्त हुए हैं।राइजिंग नॉर्थ ईस्ट शिखर सम्मेलन 2025 पर टिप्पणी करते हुए मंत्री ने कहा कि उत्तर पूर्व क्षेत्र विकास मंत्रालय की स्थापना के बाद से यह पहली बार है कि इस पैमाने पर निवेश शिखर सम्मेलन का आयोजन किया गया है। कार्यक्रम के उद्घाटन समारोह के दौरान रिलायंस इंडस्ट्रीज के चेयरमैन मुकेश अंबानी, अडाणी समूह के चेयरमैन गौतम अडाणी और वेदांता के चेयरमैन अनिल अग्रवाल समेत उद्योग जगत के प्रमुखों ने उत्तर पूर्व क्षेत्र में अवसरों का पता लगाने के लिए सामूहिक रूप से 1,55,000 करोड़ रुपये से अधिक के निवेश की घोषणा की थी।

पेट्रोल और डीजल की कीमतें स्थिर

एजेंसी

नई दिल्ली। अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर कच्चे तेल की कीमतों में तेजी जारी रहने के बावजूद घरेलू बाजार में पेट्रोल और डीजल के दाम आज स्थिर रहे, जिससे दिल्ली में पेट्रोल 94.72 रुपये प्रति लीटर तथा डीजल 87.62 रुपये प्रति लीटर पर पड़े रहे।तेल विपणन करने वाली प्रमुख कंपनी हिन्दुस्तान पेट्रोलियम कार्पोरेशन की वेबसाइट पर जारी दरों के अनुसार, देश में आज पेट्रोल और डीजल की कीमतों में कोई बदलाव नहीं हुआ है।

दिल्ली में इनकी कीमतों के यथावत रहने के साथ ही मुंबई में पेट्रोल 104.21 रुपये प्रति लीटर पर और डीजल 92.15 रुपये प्रति लीटर पर रहा। वैश्विक स्तर पर साप्ताहांत पर अमेरिकी क्रूड 0.92 प्रतिशत उबलकर 61.76 डॉलर प्रति बैरल पर पहुंच गया। इसी तरह लंदन ब्रेंट क्रूड 0.39 प्रतिशत की तेजी लेकर 65.03 डॉलर प्रति बैरल पर रहा।

अगले सप्ताह 9 नए आईपीओ की लॉन्चिंग, तीन कंपनियां करेंगी शेयरों की लिस्टिंग

एजेंसी

नई दिल्ली। घरेलू शेयर बाजार में तेजी का माहौल बनते ही प्राइमरी मार्केट में भी हलचल नजर आने लगी है। सोमवार से शुरू हो रहे कारोबारी सप्ताह के दौरान प्राइमरी मार्केट काफी गुलजार रहने वाला है। इस सप्ताह 9 नए आईपीओ की लॉन्चिंग होने वाली है। इनमें से 4 मेनबोर्ड सेगमेंट के हैं। इसके साथ ही पिछले सप्ताह 22 मई को सब्सक्रिप्शन के लिए खुले एक आईपीओ में भी कल (26 मई) तक बोली लगाई जा सकेगी। आईपीओ लॉन्चिंग के अलावा इस सप्ताह तीन कंपनियां अपने शेयरों की लिस्टिंग के जरिए स्टॉक मार्केट में कारोबार की शुरुआत करेंगी। सप्ताह के पहले कारोबारी दिन 26 मई को एजीस वोपैक टर्मिनल्स का 2,800 करोड़ रुपये का आईपीओ सब्सक्रिप्शन के लिए खुलेगा। इस आईपीओ में 28 मई तक बोली लगाई जा सकेगी। आईपीओ के तहत बोली लगाने के लिए 223 रुपये से 235 रुपये प्रति शेयर का प्राइस बैंड तय किया गया है, जबकि लॉट साइज 63 शेयर का है। कंपनी के शेयरों का एलॉटमेंट 29 मई को किया जाएगा। इनकी लिस्टिंग 2 जून को बीएसई और एनएसई पर होगी। इसी तरह लीला ब्रांड के तहत लग्जरी होटल और रिसॉर्ट चल चलने वाली कंपनी श्लॉस बैंगलोर लिमिटेड का 3,500 करोड़ रुपये का आईपीओ भी 26 मई को ही सब्सक्रिप्शन के लिए खुलेगा। इस आईपीओ में 28 मई तक बोली लगाई जा सकेगी। आईपीओ के तहत बोली लगाने के लिए 413 रुपये से 435 रुपये प्रति शेयर का प्राइस बैंड तय किया गया है, जबकि लॉट साइज 34 शेयर का है। कंपनी के शेयरों का एलॉटमेंट 29 मई को किया जाएगा। वहीं इनकी लिस्टिंग 2 जून को बीएसई और एनएसई पर होगी। इसके अगले दिन 27 मई को प्रोस्ट्रैम इन्फो सिस्टम का 168 करोड़ रुपये का आईपीओ सब्सक्रिप्शन के लिए खुलेगा। इस आईपीओ में 29 मई तक बोली लगाई जा सकेगी। आईपीओ के तहत बोली लगाने के लिए 95 रुपये से 105 रुपये प्रति शेयर का प्राइस बैंड तय किया गया है, जबकि लॉट साइज 142 शेयर का है। कंपनी के शेयरों का एलॉटमेंट 30 मई को किया जाएगा। वहीं इनकी लिस्टिंग 3 जून को बीएसई और एनएसई पर होगी। इसी दिन एस्टोनिया लैब्स का 37.67 करोड़ रुपये का आईपीओ भी सब्सक्रिप्शन के लिए खुलेगा। इस आईपीओ में 29 मई तक बोली लगाई जा सकेगी। आईपीओ के तहत बोली लगाने के लिए 128 रुपये से 135 रुपये प्रति शेयर का प्राइस बैंड तय किया गया है, जबकि लॉट साइज 1,000 शेयर का है। कंपनी के शेयरों का एलॉटमेंट 30 मई को किया जाएगा। वहीं इनकी लिस्टिंग 3 जून को बीएसई के एसएमई प्लेटफॉर्म पर होगी। इसी तरह ब्लू वाटर लॉजिस्टिक्स का 40.50 करोड़ रुपये का आईपीओ भी 27 मई को ही सब्सक्रिप्शन के लिए खुलेगा। इस आईपीओ में भी 29 मई तक बोली लगाई जा सकेगी।

जेआईएल और अन्य के खिलाफ कार्रवाई, छापेमारी में 1.70 करोड़ रुपये नकद और अचल संपत्ति से जुड़े दस्तावेज जब्त

एजेंसी

नई दिल्ली। प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) ने कहा कि जेपी इंफ्राटेक लिमिटेड (जेआईएल), जयप्रकाश एसोसिएट्स लिमिटेड (जेएएल) और अन्य कंपनियों के परिसरों पर कई गई छापेमारी में 1.70 करोड़ रुपये नकद और अचल संपत्तियों से जुड़े दस्तावेज जब्त किए हैं। घर खरीदने वालों से कथित धोखाधड़ी के मामले में धनशोधन (मनी लॉन्ड्रिंग) की जांच के तहत यह कार्रवाई की गई। ईडी ने 23 मई को दिल्ली, नोएडा, गाजियाबाद और मुंबई में कुल 15 ठिकानों पर छापेमारी की थी। यह कार्रवाई धनशोधन रोकथाम अधिनियम (पीएमएलए) के तहत की गई। जांच एजेंसी ने एक बयान में कहा, जांच में जेएएल, उसकी सहयोगी कंपनियों, प्रमोटर्स और निदेशकों के कार्यालयों और परिसरों को शामिल किया गया। इसके अलावा, जेएएल के गौरसंस इंडिया प्राइवेट लिमिटेड, गुलशन होम्ज

प्राइवेट लिमिटेड और महागुण रियल एस्टेट प्राइवेट लिमिटेड जैसे मुख्य कारोबारी साझेदारों के ठिकानों पर भी छापे मारे गए। दिल्ली पुलिस की आर्थिक अपराध शाखा (ईओडब्ल्यू) और उत्तर प्रदेश पुलिस ने जेएएल, जेआईएल और उनके प्रमोटर्स, निवेशकों के खिलाफ प्राथमिकी दर्ज की थी, जिससे बाद धनशोधन की जांच शुरू हुई। प्राथमिकी में बड़े पैमाने पर धोखाधड़ी और आपराधिक साजिश के आरोप लगाए गए हैं। इसमें कहा गया है कि जेपी विशटाउन (जेआईएल) और जेपी ग्रीन्स (जेएएल) ने परियोजना में फ्लैट और प्लॉट देने के नाम पर घर खरीददारों और निवेशकों को गुमराह किया और उनसे पैसे निवेश करवाए गए।

रुपए ने लगाई लंबी छलांग, डॉलर के मुकाबले हो गया मजबूत

नई दिल्ली। भारतीय रुपए की मजबूती का दौर लगातार जारी है। रुपए ने अमेरिकी डॉलर के मुकाबले 40 पैसे की जबरदस्त तेजी दिखाते हुए 85.05 प्रति डॉलर के स्तर को छू लिया। डॉलर की कमजोरी और घरेलू शेयर बाजारों की मजबूती ने इस उछाल में अहम भूमिका निभाई। साथ ही विदेशी निवेश में वृद्धि और भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा वित्त वर्ष 2024-25 के लिए सरकार को रिकॉर्ड डिविडेंड देने की घोषणा ने भी रुपए को मजबूती प्रदान की है। अंतरबैंक विदेशी मुद्रा बाजार में रुपया 85.02 प्रति डॉलर पर खुला और मजबूत होकर 84.98 के स्तर तक पहुंचा। बाद में यह 85.05 प्रति डॉलर पर स्थिर हुआ, जो पिछले सत्र के मुकाबले 40 पैसे की मजबूती को दर्शाता है। रुपया 85.45 प्रति डॉलर पर बंद हुआ था। इस दौरान, छह प्रमुख वैश्विक मुद्राओं के मुकाबले अमेरिकी डॉलर की स्थिति को दर्शाने वाला डॉलर इंडेक्स 0.34फीसदी गिरकर 98.67 पर आ गया। घरेलू शेयर बाजारों में भी तेजी देखने को मिली, जहां बीएसई सेंसेक्स 630.68 अंक चढ़कर 82,351.76 पर और निफ्टी 187 अंक की बढ़त के साथ 25,040.15 के स्तर पर पहुंच गया।

टॉप 10 की 6 कंपनियों का मार्केट कैप 78 हजार करोड़ गिरा, रिलायंस इंडस्ट्रीज को सबसे ज्यादा नुकसान

एजेंसी

नई दिल्ली। घरेलू शेयर बाजार में पिछले कारोबारी सप्ताह के दौरान हुई खरीद-बिक्री के कारण देश की टॉप 10 मोस्ट वैल्यूड कंपनियों में से 6 कंपनियों के मार्केट कैप में 78 हजार करोड़ रुपये से अधिक की गिरावट आ गई। इनमें सबसे अधिक नुकसान रिलायंस इंडस्ट्रीज को हुआ। दूसरी ओर, टॉप 10 में शामिल 4 कंपनियों के मार्केट कैप में 15 हजार करोड़ रुपये से अधिक की बढ़ोतरी हो गई। इनमें सबसे अधिक मुनाफा भारती एयरटेल को हुआ। इस सप्ताह के कारोबार के दौरान रिलायंस इंडस्ट्रीज, टाटा कंसलटेंसी सर्विसेज (टीसीएस), आईसीआईसीआई बैंक, स्टेट बैंक ऑफ इंडिया (एसबीआई), इंफोसिस और हिन्दुस्तान यूनिलीवर के मार्केट कैप में 78,166.08 करोड़ रुपये की गिरावट आ गई। दूसरी ओर, भारती एयरटेल, बजाज फाइनेंस, आईटीसी और एचडीएफसी बैंक के मार्केट कैप में 15,946.03 करोड़ रुपये की बढ़ोतरी हो गई। कारोबार के दौरान 19 मई से 23 मई के बीच रिलायंस इंडस्ट्रीज का मार्केट कैप 40,800.40 करोड़ रुपये घट कर 19,30,339.56 करोड़ रुपये के स्तर पर आ गया। इसी तरह टाटा कंसलटेंसी सर्विसेज (टीसीएस) का मार्केट कैप 17,710.54 करोड़ रुपये की गिरावट के साथ 12,71,395.95 करोड़ रुपये के स्तर पर पहुंच गया। इसके अलावा इंफोसिस का मार्केट कैप 10,488.58 करोड़ रुपये गिर कर 6,49,876.91 करोड़ रुपये के स्तर पर, हिंदुस्तान यूनिलीवर का मार्केट कैप 5,462.80 करोड़ रुपये कम होकर 5,53,974.88 करोड़ रुपये के स्तर पर, आईसीआईसीआई बैंक का मार्केट कैप 2,454.31 करोड़ रुपये घट कर 10,33,868.01 करोड़ रुपये के स्तर पर और स्टेट बैंक ऑफ इंडिया (एसबीआई) का मार्केट कैप 1,249.45 करोड़ रुपये की गिरावट के साथ 7,05,446.59 करोड़ रुपये

के स्तर पर और पहुंच गया। दूसरी ओर, भारती एयरटेल का मार्केट कैप सोमवार से शुक्रवार के कारोबार के बाद 10,121.24 करोड़ रुपये बढ़ कर 10,44,682.72 करोड़ रुपये के स्तर पर पहुंच गया। इसी तरह बजाज फाइनेंस का मार्केट कैप 4,548.87 करोड़ रुपये बढ़ कर 5,74,207.54 करोड़ रुपये के स्तर पर आ गया। इसके अलावा आईटीसी का मार्केट कैप 875.99 करोड़ रुपये की मजबूती के साथ 5,45,991.05 करोड़ रुपये के स्तर पर और एचडीएफसी बैंक का मार्केट कैप 399.93 करोड़ रुपये की तेजी के साथ 14,80,723.47 करोड़ रुपये के स्तर पर पहुंच गया। मार्केट कैप के लिहाज से रिलायंस इंडस्ट्रीज 19,30,339.56 करोड़ रुपये के बाजार पूंजीकरण (मार्केट कैप) के साथ देश की सबसे अधिक मार्केट कैप वाली कंपनी रही। इसके बाद एचडीएफसी बैंक (कुल मार्केट कैप 14,80,723.47 करोड़ रुपये), टीसीएस (कुल मार्केट कैप 12,71,395.95 करोड़ रुपये), भारती एयरटेल (कुल मार्केट कैप 10,44,682.72 करोड़ रुपये), आईसीआईसीआई बैंक (कुल मार्केट कैप 10,33,868.01 करोड़ रुपये), स्टेट बैंक ऑफ इंडिया (कुल मार्केट कैप 7,05,446.59 करोड़ रुपये), इंफोसिस (कुल मार्केट कैप 6,49,876.91 करोड़ रुपये), बजाज फाइनेंस (कुल मार्केट कैप 5,74,207.54 करोड़ रुपये), हिंदुस्तान यूनिलीवर (कुल मार्केट कैप 5,53,974.88 करोड़ रुपये) और आईटीसी (कुल मार्केट कैप 5,45,991.05 करोड़ रुपये) के नाम सबसे मूल्यवान टॉप 10 कंपनियों के लिस्ट में दूसरे से दसवें स्थान पर बने रहे।

27 करोड़ बार देखा गया

प्रियंका चोपड़ा

का ये गाना, एक्ट्रेस ने खुद दी है

बॉलीवुड से लेकर हॉलीवुड तक में अपनी एक्टिंग का लोहा मनवा चुकीं मशहूर अभिनेत्री प्रियंका चोपड़ा के पास एक्टिंग के अलावा सिंगिंग का टैलेंट भी है. प्रियंका चोपड़ा कुछ एक गाने भी गा चुकी हैं. उनके द्वारा गाया एक गाना तो यूट्यूब पर 27 करोड़ बार देखा गया है. इस गाने में उनका साथ मशहूर इंटरनेशनल सिंगर पिटबुल ने दिया था. आइए आपको बताते हैं कि प्रियंका का ये गाना कौन सा है और ये कब रिलीज किया गया था.

2013 में आया था प्रियंका का 'एक्जॉटिक'

प्रियंका चोपड़ा द्वारा गाया गया 'एक्जॉटिक' दूसरा गाना था. इसमें हिंदी लिरिक्स को एक्ट्रेस ने ही आवाज दी थी. ये गाना साल 2013 में यूट्यूब पर 'प्रियंका चोपड़ा वेवो' नाम के

यूट्यूब चैनल से रिलीज किया गया था. इसके जरिए प्रियंका इंटरनेशनल पहचान बनाने में कामयाब हुई थीं. आते ही ये सॉन्ग यूट्यूब पर छा गया था.

27 करोड़ से ज्यादा बार देखा गया

प्रियंका ने इसे साल 2013 में मुंबई में लॉन्च किया था. इसमें उनका बिकिनी अवतार फैंस को काफी पसंद आया था. वहीं एक्ट्रेस ने पिटबुल के साथ अपने ग्लैमर अंदाज से भी तमाम फैंस का ध्यान खींच लिया था. पिटबुल और प्रियंका ने एक्जॉटिक को मियामी की खूबसूरत लोकेशन पर शूट किया था. जिसमें प्रियंका देसी तड़का लगाते हुए भी दिखी थीं. इसमें पिटबुल का नाम जुड़ने से इसे इंटरनेशल लेवल पर भी गजब की लोकप्रियता मिली थी. अब तक इस सॉन्ग को यूट्यूब पर 270 मिलियन (27 करोड़) व्यूज मिल चुके हैं.

1000 करोड़ी फिल्म में नजर आएंगी प्रियंका

प्रियंका ने साल 2018 में अमेरिका के मशहूर सिंगर निक जोनस से शादी कर ली थी. इसके बाद वो पति के साथ अमेरिका में ही शिफ्ट हो गईं. शादी करने और भारत छोड़ने के बाद प्रियंका इंडियन फिल्म इंडस्ट्री में काम करती हुई नजर नहीं आईं. हालांकि अब वो साउथ के मशहूर डायरेक्टर एसएस राजामौली और साउथ सुपरस्टार महेश बाबू की फिल्म 'स्स्म्ब29' में नजर आने वाली हैं. कुछ दिनों पहले ही एक्ट्रेस इस पिक्चर की शूटिंग के लिए इंडिया आई थीं और फिर वापस लौट गई थीं. ये साउथ सिनेमा ही नहीं बल्कि भारत की सबसे महंगी फिल्म साबित होगी. इसका बजट 1000 करोड़ रूपये बताया जा रहा है.

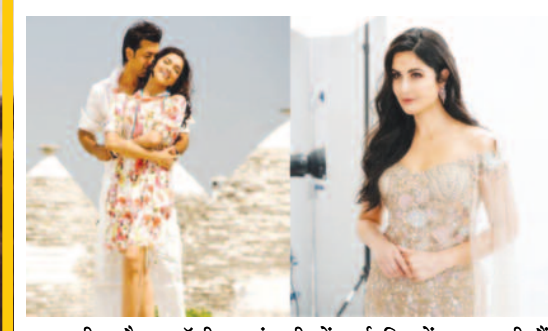

रणबीर-दीपिका की फिल्म से जब कटा कटरीना का पत्ता, आखिरी वक्त में किया गया बाहर

कटरीना कैफ बॉलीवुड इंडस्ट्री में कई फिल्में कर चुकी हैं. शुरुआत के फिल्मों से ही एक्ट्रेस ने अपनी छाप लोगों पर छोड़ दी थी. आज उनका नाम टॉप एक्ट्रेसेस में शामिल हैं, हालांकि एक्ट्रेस ने हाल ही में खुलासा किया है कि रणबीर कपूर और दीपिका की एक फिल्म में से उनका पूरा किरदार ही हटा दिया गया था. कटरीना ने बताया कि वो फिल्म में चौथी लड़की का किरदार निभाने वाली थीं, लेकिन बाद में उन्हें बताया गया कि वो फिल्म का हिस्सा नहीं हैं.

कटरीना ने इंडस्ट्री में एक आउटसाइडर के तौर पर अपनी शुरुआत की थी. एक्ट्रेस ने हाल ही में एक इंटरव्यू में बताया कि रणबीर कपूर-दीपिका पादुकोण की फिल्म बचना ए हसीनों में उनका भी रोल था. एक्ट्रेस ने बताया कि जिस तरह रणबीर के अपोजिट 3 लड़कियां दिखाई गई हैं, वहीं उसमें से चौथी लड़की का किरदार मेरा था. इस बैनर के तले मुझे पहली फिल्म मिलने वाली थी, जिसके लिए मैं काफी एक्साइटेड थी.

2008 में आई थी फिल्म

हालांकि , बाद में मुझे बताया गया कि फिल्म में उनके किरदार की वजह से स्क्रिप्ट बड़ी हो रही है, जिसकी वजह से वो रोल काटा जा रहा है. साथ ही एक्ट्रेस ने बताया कि ये फिल्म 2008 में आई थी, उस वक्त फिल्म सिंह इज किंग रिलीज हुई थी, जो कि काफी बड़ी हिट साबित हुई थी. हालांकि, बचना ए हसीनों के वक्त दीपिका और रणबीर से ज्यादा फिल्मों में कटरीना नजर आ चुकी थी. वो पार्टनर, मैंने प्यार क्यों किया जैसी फिल्मों में शामिल थीं.

लोगों ने किया था डिमोटिवेट

एक्ट्रेस ने बातचीत के दौरान ये भी बताया था कि कुछ लोगों ने उन्हें कहा था कि वो बॉलीवुड में सक्सेस नहीं हो पाएंगी. लेकिन, अभी की बात करें, तो वो फिल्मी दुनिया का बड़ा नाम बन चुकी हैं. आखिरी बार एक्ट्रेस फिल्म मैरी क्रिसमस में नजर आई थीं, जो कि साल 2024 में रिलीज हुई थी. वहीं शुरुआत की बात करें, तो उन्होंने साल 2003 में फिल्म बूम से अपना डेब्यू किया था, फिर धीरे-धीरे करते वो टॉप एक्ट्रेस की कैटेगरी में आ गईं.

सारा मुद्दा सुलझ जाएगा... अक्षय कुमार की कंपनी ने परेश रावल पर ठोका करोड़ों का हर्जाना, तो बाबू राव ने दे दिया ऐसा जवाब

प्रियदर्शन की अपकमिंग फिल्म हेरा फेरी को लेकर कुछ न कुछ खबर आ ही रही है. फिल्म से बाबू राव यानी परेश रावल के निकलने के बाद से फिल्म के मेकर्स के साथ ही साथ फैंस में भी काफी निराशा है. हालांकि, फिल्म से एक्जिट करने के बाद अक्षय कुमार ने एक्टर पर लीगल एक्शन लिया था और फिल्म के नुकसान के लिए हर्जाने की मांग की थी. हालांकि, इसी मामले में हाल ही में परेश रावल ने अपने सोशल मीडिया पर अपडेट शेयर किया है.साल 2000 में हेरा फेरी का पहला पार्ट आया था, जिसके बाद फिल्म की तिकड़ी राजू, बाबू राव और श्याम काफी ज्यादा फेमस हो गए थे. अब इनमें से परेश रावल ने अपने किरदार को छोड़ दिया है. इस खबर को सुनने के बाद से कई लोगों का ये कहना है कि फिल्म ही न बनाई जाए. हालांकि, फिल्म से अपना नाम वापस लेने के बाद से अक्षय कुमार ने हुए नुकसान के लिए परेश रावल से 25 करोड़ के हर्जाने की मांग की थी. जिसके बाद से अब एक्टर के वकील ने टीम को इस मामले का जवाब भेजा है.

सारे मुद्दे सही हो जाएंगे

परेश रावल ने इस बात की जानकारी देते हुए अपने एक्स अकाउंट पर लिखा है, मेरे वकील अमीत नाइक ने मेरे टर्मिनेशन और एग्जिट को लेकर जवाब भेजा है. एक बार जब वो मेरा जवाब पढ़ लेंगे तो सारे मुद्दे सही हो जाएंगे. बॉलीवुड हंगामा की रिपोर्ट की माने, तो हाल ही में परेश रावल ने फिल्म की साइनिंग अमाउंट वापस कर दी है. हाल ही में इस मामले में सुनील शेट्टी का भी रिएक्शन सामने आया है, जिसमें उन्होंने बताया है कि इस बारे में जानने के बाद उन्हें झटका लगा है.

डायरेक्टर ने बताया कुछ और

हेरा फेरी 3 को अक्षय कुमार के प्रोडक्शन हाउस के बैनर तले बनाया जा रहा है. फिल्म के छोड़ने को लेकर परेश रावल ने बताया था कि इसमें क्रिएटिव डिफरेंस की बात नहीं है और न ही डायरेक्टर के साथ कुछ है एक्टर ने कहा कि डायरेक्टर ने उन्हें फिल्म न छोड़ने के लिए काफी समझाया भी था. हालांकि, जब इस मामले में फिल्म के डायरेक्टर प्रियदर्शन से बात किया गया, तो उन्होंने बताया कि उन्हें इस बारे में कुछ भी पता नहीं था.

कॉपी कैट है...

मल्लिका शेरावत

के 8 साल पुराने लुक से आलिया का Cannes लुक हुआ मैच, तो लोगों ने सुनाई खरी-खोटी

फ्रांस में हो रहे कान फिल्म फेस्टिवल में आलिया भट्ट ने डेब्यू किया है. रेड कार्पेट पर एक्ट्रेस का दो लुक सामने आया है, जिसे लोग काफी पसंद कर रहे हैं. हालांकि, एक्ट्रेस का पहला लुक सोशल मीडिया पर काफी ज्यादा सर्कुलेट

हो रहा है, जिसमें उन्होंने फ्लोरल गाउन पहना हुआ है. दरअसल, आलिया का ये कान लुक लोगों को साल 8 साल पुराने कान फिल्म फेस्टिवल की याद दिला रहा है.कान फिल्म फेस्टिवल में आलिया ने ऑफ शोल्डर गाउन पहना हुआ था, जिसमें फूलों की कढ़ाई की गई थी. हालांकि, उनकी दूसरी ड्रेस ने लोगों का ध्यान ज्यादा खींचा है. वहीं उनके फ्लोरल गाउन की बात की जाए, तो लोग उसको मल्लिका शेरावत के कान फिल्म फेस्टिवल लुक से कर रहे हैं.

दरअसल, साल 2017 में मल्लिका ने रेड कार्पेट पर इसी तरह के गाउन में जलवा बिखेरा था. एक्ट्रेस के उस वॉक को अभी तक लोग याद रखे हुए हैं.

2017 के लुक से कंपेयर

मल्लिका ने 8 साल पहले इसी तरह का ऑफ शोल्डर गाउन कैरी किया था, जिसके साथ उन्होंने अपने लुक को काफी सिंपल रखा था. कान फिल्म फेस्टिवल 2017 का वॉक मल्लिका का सबसे फेमस वॉक रहा है. उनके गाउन पर लोगों की निगाहें टिक गई थीं, साथ ही साथ गाउन पर उभरे हुए फूल ड्रेस की शोभा में चार चांद लगा रहे थे. मल्लिका के उस लुक को लोग अब आलिया के लुक से कंपेयर कर रहे हैं, जो कि लगभग एक जैसा ही है.

कॉपी को लेकर किया ट्रोल

सोशल मीडिया पर दोनों ही एक्ट्रेस की तस्वीर साथ में वायरल हो रही है. इस दौरान लोगों ने कमेंट सेक्शन में दोनों के लुक को कंपेयर करना शुरू कर दिया है.

जिसमें ज्यादातर लोगों ने मल्लिका के लुक को ज्यादा बेहतर बताया है, वहीं कई लोग आलिया को ड्रेस कॉपी करने के लिए ट्रोल कर रहे हैं. एक यूजर ने कमेंट करते हुए आलिया को कॉपी कैट तक कह दिया है. वहीं दूसरे यूजर ने लिखा है कि मल्लिका ने इस लुक को ज्यादा बेहतर तरीके से कैरी किया हुआ है.